04 - जन के संघर्ष, पीड़ा और उम्मीदों की सशक्त...

05 - कला साहित्य और टकराहटों का प्रभाववादी दौर

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 28 दिसंबर, 2025

06 - एआई का इंडिया: चमकती स्क्रीनें, छूटती ज़िंदगियाँ

07 - 'धुरंधर' के धमाके से निकला अनोखा अक्षय

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 90, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

दिसंबर की सांझ : राजसमंद झील

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

भागना
प्राणिमात्र की सहज प्रवृत्ति है

दुध-मुँहा बच्चा भागता है
घुटनों के बल माँ के पीछे
माँ भागती है खेत-क्यार में
दादी भागती है भेड़-बकरियों के पीछे
पिता भागते है काम पर

भागना
उतना ही स्वाभाविक है
जितने जीवन के तमाम कार्य
नदियाँ समन्दर की तरफ भागती हैं
धरती भागती है सूरज के पीछे

गाँव शहर की तरफ भागते हैं
शहर भागते हैं राजधानी की तरफ
राजधानी में बैठा राजा भागता है विदेश

भागना
कोई अपराध नहीं है
वरन् इसे शास्त्र-सम्मत कहा जा सकता है

- विजय राही

पीएम मोदी ने गुरु गोबिंद सिंह को किया याद

- कहा-अदम्य साहस, करुणा और त्याग का प्रतीक बना उनका जीवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि गुरु गोबिंद सिंह साहस, करुणा और त्याग के प्रतीक हैं तथा उनका जीवन एवं शिक्षाएं सभी को सत्य, न्याय एवं धर्मपरायणता के लिए खड़े होने और मानवीय गरिमा की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं। पीएम मोदी ने कहा कि सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह की दूरदृष्टि पीढ़ियों को सेवा और निस्वार्थ कर्तव्य की ओर निरंतर मार्गदर्शन देती रही है। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पवित्र प्रकाश उत्सव के अवसर पर हम उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। वह साहस, करुणा और त्याग के प्रतीक हैं। पीएम मोदी ने आगे लिखा कि उनका जीवन और शिक्षाएं हमें सत्य, न्याय, धर्मपरायणता के लिए खड़े होने और मानवीय गरिमा की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं। आपको बता दें कि प्रधानमंत्री ने इस वर्ष की शुरुआत में तख्त श्री हरिमंदिर पटना साहिब की अपनी यात्रा की कुछ तस्वीरें भी साझा कीं, जहां उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह एवं माता साहिब कौर से संबंधित पवित्र 'जोड़ा साहिब' (जूतों की एक जोड़ी) के दर्शन भी किए थे। मोदी ने नौ जनवरी, 2022 को घोषणा की थी कि श्री गुरु गोबिंद सिंह के पुत्रों साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत की याद में 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में मनाया जाएगा। वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में सरकार देश भर में ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर रही है जिनका उद्देश्य नागरिकों को साहिबजादों के असाधारण साहस एवं सर्वोच्च बलिदान के बारे में बताना है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक कार्यक्रम में भाग लिया, जहां उन्होंने कहा था कि दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के साहिबजादों (पुत्रों) का बलिदान क्रूर मुगल शासन के खिलाफ भारत के अदम्य साहस प्रतीक है।

अटल जी के जन्मशती वर्ष में मध्यप्रदेश का हो रहा अभ्युदय: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने सतना में 652.54 करोड़ रूपए से अधिक लागत के विकास कार्यों का किया लोकार्पण एवं भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हम भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मशती वर्ष मना रहे हैं। अटल जी के जन्मशती वर्ष में ही मध्यप्रदेश का रीयलस्टिक डेवलपमेंट (अभ्युदय) हो रहा है। हम मध्यप्रदेश में सरकार नहीं, परिवार चलाते हैं। प्रदेश के हर घर को परिवार मानकर जनहित के निर्णय ले रहे हैं। हमारे निर्णयों में अंत्योदय भी है और ग्रामोदय भी। सतना जिला भगवान श्रीराम की कर्मभूमि रहा है। इसलिए हमारी सरकार चित्रकूट को भव्य और दिव्य धाम के

- सतना विमानतल की एयरस्ट्रिप की लंबाई बढ़ाकर 1800 मीटर तक की जाएगी
- मध्यप्रदेश में नए साल से चलेंगी सरकारी बसें

रूप में विकसित करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सतना को स्मार्ट सिटी योजना की सौगात देकर विकास कार्यों की गंगा बहा दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को सतना के आईएसबीटी परिसर में आयोजित लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 31 करोड़ रूपए की लागत से नवनिर्मित आईएसबीटी का लोकार्पण किया और इसका नामकरण अटल बिहारी वाजपेयी अंतर्राज्यीय बस अड्डा करने

की घोषणा की। अटल जी राजनीति में शुचिता और राष्ट्रीयता के प्रतीक है। उन्होंने राष्ट्र, धर्म और जनकल्याण के लक्ष्यों को लेकर सरकार चलाई। भारतीय संसद में 50 वर्षों तक अटल जी की निर्भीक वाणी गूंजती रही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सतना में आईएसबीटी बन चुका है। राज्य सरकार की भी पूरी तैयारी है कि नए साल से प्रदेश में सरकारी बसों का संचालन प्रारंभ हो जाएगा। मुख्यमंत्री सुगम लोक परिवहन सेवा के नाम से प्रदेश के गांव-गांव तक सस्ती और सुविधाजनक बस परिवहन सेवा प्रारंभ कर दी जाएंगी। शहरों में लग्जरी बसें चलाई जाएंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घोषणा करते हुए कहा कि सतना विमानतल की एयरस्ट्रिप की वर्तमान लंबाई बढ़ाकर अब 1800 मीटर तक की जाएगी, जिससे यहां जेट विमान भी उतर सकें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सतना जिले का कोना-कोना सिंचित किया जाएगा। बरगी नहर परियोजना का पूरा लाभ सतना जिले को मिलेगा। इससे यहां की डेढ़ लाख हैक्टेयर से अधिक कृषि भूमि को सिंचाई की स्थायी सुविधा मिलेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सतना में 652.54 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाले 12 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इसमें नवीन आधुनिक आईएसबीटी एवं धवारी क्रिकेट स्टेडियम के नवीनीकरण कार्य के लोकार्पण सहित करीब 383 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित होने वाले 650 बिस्तरीय नवीन अस्पताल का भूमिपूजन भी शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह तीनों सौगातें सतना के विकास में चार चांद लगाएंगी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हितलाभ भी वितरित किये।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह पूरा सप्ताह मध्यप्रदेश के विकास का ऐतिहासिक सप्ताह रहा है। धार और बैतूल में पीपीपी मॉडल पर मेडिकल कॉलेज का भूमिपूजन हुआ। ग्वालियर में अभ्युदय मध्यप्रदेश ग्रोथ समिट का आयोजन हुआ।

इंडिगो संकट

सरकार ने गोपनीय रखी, दूसरी रिपोर्ट भी आई

जांच पैनल ने 22 दिन में सौंपी रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिगो में बड़े पैमाने पर फ्लाइट कैंसिलेशन की जांच करने वाले पैनल ने शुक्रवार शाम अपनी रिपोर्ट एविएशन रेगुलेटर को सौंप दी है। इस कमेटी को 22 दिन पहले 5 दिसंबर को बनाया गया था। हालांकि रिपोर्ट्स में क्या लिखा है, इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। उधर, अंग्रेजी न्यूज पेपर की एक रिपोर्ट के मुताबिक डीजीसीए के एक अलग सिस्टमैटिक रिव्यू यानी एक तरह की जांच में कहा गया है कि इंडिगो ने नवंबर में अपने 307 एयरबस-विमानों के बेड़े को चलाने के लिए 4,575 पायलटों को नियुक्त किया था। यह ग्लोबल बेस्ट प्रैक्टिस के तहत जरूरी 3,684 पायलटों की संख्या से 891 ज्यादा थे। इससे पता चलता है कि क्रू की कमी नहीं, बल्कि शेड्यूलिंग (रोस्टर) में गड़बड़ी की वजह से ही फ्लाइट्स कैंसिल हुईं। इधर, इंडिगो ने फ्लाइट कैंसिलेशन प्रभावित यात्रियों को 10,000 के ट्रैवल वाउचर जारी करना शुरू

कर दिया है। ये वाउचर 12 महीने तक वैध रहेंगे, जो इंडिगो की किसी भी फ्लाइट में इस्तेमाल किए जा सकेंगे। दरअसल, दिसंबर महीने की शुरुआत में इंडिगो की 10 दिनों के भीतर 5,000 से ज्यादा उड़ानें रद्द हो गई थीं, जिससे देश भर में हजारों यात्री फंस गए थे। सिविल एविएशन मिनिस्ट्री ने यह पता लगाने के लिए एक सिस्टमैटिक रिव्यू का भी आदेश दिया था कि क्या एयरलाइन की तैयारी बदले हुए नियमों को लेकर पर्याप्त थी।

यह समीक्षा नवंबर के आखिर से दिसंबर के मध्य तक यात्रियों को 1,500 करोड़ से अधिक की रिफंड राशि लौटाने के बाद शुरू की गई थी। इसमें खुलासा हुआ कि ऑपरेशन,

दावा-

क्रू की कोई कमी नहीं रोस्टर में गड़बड़ी थी

ट्रेनिंग, छुट्टी और इमरजेंसी कंडीशन को कवर करने के लिए हर प्लेन में छह क्रू सेट रखे जाते हैं।

इंडिगो ने इस पूरे संकट को लेकर अपना जवाब भी डीजीसीए को दिया था, जिसमें कहा गया था कि पायलटों की संख्या तय सीमा से ज्यादा है, और असली दिक्कत पायलटों की शेड्यूलिंग और रोस्टरिंग में है। रिव्यू में यह भी बताया गया कि एयरलाइन के क्रू का उपयोग रेगुलेशन के अनुसार हर माह 100 घंटे की तुलना में 55 फीसदी था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 28 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल

सिनेमा, संस्कृति और संवाद का त्रिवेणी महाकुंभ

जगमोहन जोशी
(समीक्षक और लेखक)

खजुराहो की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरती पर 11वें %खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल% का भव्य आयोजन 16 दिसंबर से 22 दिसंबर तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह फेस्टिवल न केवल सिनेमा प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना, बल्कि कला, संस्कृति और विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच भी साबित हुआ। इस अवसर पर नवोदित फिल्मकारों को भी सम्मानित किया गया। यह पहल समाज के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रही।

खजुराहो का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल इस साल दिवंगत अभिनेता धर्मेंद्र एवं असरानी को समर्पित किया गया, वहीं फिल्म जगत में 100 साल पूरे करने वाले कलाकार वी शांताराम एवं गुरुदत्त को याद किया गया। 9 टपरा टॉकीज का निर्माण किया गया जिसमें 7 टॉकीज में धर्मेंद्र, असरानी, वी शांताराम, गुरुदत्त की फिल्में दिखाई गई। एक टपरा टॉकीज में हॉलीवुड की फिल्म दिखाई गई तथा एक टपरा टॉकीज में नवोदित फिल्मकारों की फीचर फिल्म, शॉर्ट फिल्म एवं डॉक्यूमेंट्री फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई नवोदित फिल्मकारों की सात दिनों में 102 फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई। इस फेस्टिवल के संस्थापक और आयोजक अभिनेता राजा बुंदेला ने बताया कि इस प्रतिष्ठित आयोजन में भारतीय सिनेमा के दिग्गज कलाकारों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रमुख रूप से अभिनेता अनुपम खेर, सौरभ शुक्ला अभिनेत्री पूनम ढिल्लो, अभिनेत्री सुष्मिता मुखर्जी,अभिनेत्री दीपशिखा नागपाल सहित अनेक नामचीन कलाकारों ने फेस्टिवल की शोभा बढ़ाई। इनके साथ ही देश-विदेश से आए फिल्म निर्माता, निर्देशक, लेखक और सिनेमेटोग्राफर भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। फेस्टिवल की एक विशेष उपलब्धि यह रही कि इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ़ इंडिया (आईएफएफआई) की जूरी के सदस्यों ने लगातार सात दिनों तक सहभागिता की और विभिन्न सत्रों, स्क्रीनिंग्स व संवाद कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाई। इससे फेस्टिवल की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता और अधिक सशक्त हुई।

फेस्टिवल के दौरान भारत के सभी प्रांतों से आए कलाकारों ने अपने-अपने लोक नृत्य और लोक संगीत की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। इसके अलावा मुंबई से आमंत्रित प्रोफेशनल डांस ग्रुप और ऑर्केस्ट्रा ने गीत-संगीत व नृत्य की शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। हर संध्या सांस्कृतिक रंगों से सराबोर रही, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम देखने को मिला। खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के दौरान एक टपरा टॉकीज में सातों दिन आपातकालीन दौर की इमरजेंसी प्रताड़ना एवं मीसाबंदी विषय पर आधारित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर मीसा बंदियों को क्षत्रसाल गौरव सम्मान से सम्मानित भी किया गया।

फेस्टिवल में आधुनिक तकनीक के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के उपयोग और उसके संभावित दुष्परिणामों की जानकारी देने हेतु विशेष स्टॉल लगाया गया, जहां दर्शकों ने तकनीक से जुड़े सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं को समझा। सामाजिक सरोकार के तहत लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में इलाज के साथ-साथ निःशुल्क दवाइयों का वितरण भी किया गया, जिससे बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने लाभ उठाया। फिल्मों से जुड़े उत्कृष्ट कलाकारों, तकनीशियनों और सिने जगत में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को सिने गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। वहीं चिकित्सा, राजनीति, समाजसेवा और शिक्षा जैसे अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तित्वों को क्षत्रसाल गौरव सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया। नवोदित फिल्मकारों को भी सम्मानित किया गया यह पहल समाज के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रही।

फेस्टिवल का एक महत्वपूर्ण पक्ष विद्यार्थियों और युवा फिल्मकारों के लिए आयोजित मास्टर क्लास और वर्कशॉप रहीं। इन सत्रों में अभिनय, निर्देशन, लेखन, सिनेमेटोग्राफी, एडिटिंग और फिल्म निर्माण की अन्य विधाओं पर विशेषज्ञों ने विस्तार से व्याख्यान दिए। छात्रों को सीधे अनुभवी फिल्मकारों से संवाद करने और सीखने का अवसर मिला, जो उनके भविष्य के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। इस तरह खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल सिनेमा, संस्कृति और शिक्षा का एक समृद्ध संगम बनकर उभरा। इस आयोजन ने न केवल खजुराहो को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म मानचित्र पर और मजबूत पहचान दिलाई, बल्कि युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का सशक्त मंच भी प्रदान किया।

खजुराहो जैसे पर्यटन स्थल के लिए ट्रेन और फ्लाइट की सुविधाएं सीमित हैं। ऐसे में यदि किसी दिन फ्लाइट कैंसिल हो जाए, तो उसी दिन खजुराहो पहुंच पाना कठिन हो जाता है। फेस्टिवल के दौरान कई आमंत्रित कलाकारों की इंडिगो की फ्लाइट कैंसिल हो गई, जिसमें नाना पाटेकर, भाग्यश्री, डॉ चन्द्रप्रकाश द्विवेदी, प्रदीप रावत, राज बब्बर, हेमा मालिनी, शुभांगी अत्रे और ऋतुपर्णा सेनगुप्ता आदि शामिल रहे। नाना पाटेकर मुंबई से दिल्ली तो पहुंच गए, लेकिन दिल्ली से खजुराहो नहीं आ सके। भाग्यश्री वाराणसी तक पहुंचीं, पर खजुराहो नहीं आ पाईं। वहीं अनुपम खेर को एक दिन वाराणसी में रुकना पड़ा और अगले दिन ट्रेन से खजुराहो आना पड़ा, जहां कोहरे के कारण ट्रेन की लेटलतीफी का सामना करना पड़ा। इन तमाम चुनौतियों के बावजूद आयोजकों की मेहनत, समन्वय और प्रतिबद्धता के चलते खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसे दर्शकों और सिनेप्रेमियों से भरपूर सराहना मिली।

अनुपम खैर, पूनम ढिल्लो, सौरभ शुक्ला, दीपशिखा नागपाल, पंकज बैरी, निर्देशक एन चंद्रा, जयंत देशमुख इंदिरा तिवारी, वेद थापर निर्देशक सुधीर आजाद को भारती प्रधान, अवधेश महाराज एवं फ्रांस अभिनेत्री को मारियन बोर्गो सिनेमेटोग्राफर मलय राय सुबोध सिन्हा (साहित्यकार), गौरव शर्मा, शिबाशीष सरकार, भूपिंदर सिद्धू, सुरिंदर अहलावत, डॉ योगेश श्रीवास्तव और गौरव शर्मा, फेदुद्दीन फरीद, मेहंदी बशीर खान एवं सुरेश राम विदेशी कलाकारों में रॉबर्ट मैक्सीन, अलफ्रेंडो केन्डेरा, मार्क एन्जल्स विनसेंट रोबिन, मिस्टर फर्नांडो मैगलानेस माटो, सुश्री टिन्ना स्वेन्सडॉटिर, रेचल जोहान, वाह्युनी इंडोनेसिया, मूथिया एसफंड इंडोनेशिया। इसके अलावा %छत्रसाल गौरव सम्मान% विजय कुमार खत्री, बसंत चतुर्वेदी, अरुण कुमार उर्फ पप्पू अवस्थी, मीसाबंदी एवं स्वतंत्रता सेनानी मधुसूदन पितरे, वीरेंद्र कुमार रिछारिया एवं राहुल अग्रहरी, एमएस राणा मध्यप्रदेश पर्यटन, जावेद मंसूरी, थाना प्रभारी प्रशांत कुमार सेन, पुलिस इंस्पेक्टर ममता कांबले, प्रकाश चंसोरिया, स्वप्निल कोठरी, विजय शंकर बबेले और राजेंद्र त्रिपाठी।

अनंतनाग के बाजार में दिखे लश्कर के आतंकी

- दावा-इनमें एक पाकिस्तानी, दूसरा कुलगाम का लतीफ

अनंतनाग (एजेंसी)। अनंतनाग के बाजार में लश्कर के दो आतंकियों का सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद डेंगरपोरा और काजीबाग इलाके में सर्च ऑपरेशन लॉन्च किया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इनमें से एक आतंकी कुलगाम के खेरवन का रहने वाला मो. लतीफ भट है। वीडियो में नजर आए दूसरे आतंकी के पाकिस्तानी कमांडर हंजुल्लाह होने का दावा किया जा रहा है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि होना बाकी है। सेना और कश्मीर पुलिस के जवान इलाके में दोनों की तलाश कर रहे हैं। स्थानीय लोगों से भी पूछताछ की जा रही है ताकि आतंकियों को पकड़ने में मदद मिल सके। पिछले दिनों ऊधमपुर में भी 2 आतंकियों के देखे जाने के बाद जम्मू से कश्मीर तक 80 गांवों में तलाशी ली गई थी। जवानों ने हर घर के दरवाजे खुलवाकर जांच की थी।

बीएसएफ का दावा- 72 आतंकी लॉन्च पैड फिर सक्रिय

पिछले माह बीएसएफ के अधिकारी ने खुलासा किया था कि भारत की ऑपरेशन सिंदूर के बाद नुकसान झेलने के बावजूद पाकिस्तान ने एक बार फिर जम्मू क्षेत्र के सामने करीब 72 आतंकी लॉन्च पैड सक्रिय कर दिए हैं। इनमें से 12 लॉन्च पैड सियालकोट और जफरवाल सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास हैं, करीब 60 लॉन्च पैड एलओसी के पास सक्रिय बताए गए हैं। इसके बाद सीमा पर चौकसी और बढ़ा दी गई है।

लतीफ ने नवंबर में जॉइन किया था लश्कर

जो वीडियो सामने आया है उसमें 25 दिसंबर की तारीख है। समय शाम के 6.12 का है। वीडियो में नजर आया स्थानीय आतंकी मोहम्मद लतीफ कुलगाम के खेरवन का रहने वाला है। इसके बारे में यह दावा किया जा रहा है कि उसने नवंबर में लश्कर के शैडो संगठन कश्मीर रिवोल्यूशन आर्मी जॉइन किया था। सुरक्षा बल दोनों आतंकियों की तलाश में 30 घंटे से कर रहे हैं, हालांकि अभी तक उन्हें कोई सफलता नहीं मिली है। वहीं, आतंकियों ने भी अभी तक किसी भी घटना को अंजाम नहीं दिया है।

एलएसी पर हर टक्कर के लिए तैयार हो रहा भारत

- सुरंगों से एयरबेस तक बड़े 'खेल' का बन गया है प्लान
- भारत ने बनाया अभेद्य सुरक्षा प्लान, चीन की उड़ेगी नींद

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय की ऊंची चोटियों और दुर्गम घाटियों में भारत एक बड़े पैमाने पर निर्माण अभियान चला रहा है। सड़कें, सुरंगें, पुल और हवाई पट्टियां बनाई जा रही हैं। यह सब चीन के साथ सीमा पर संभावित टकराव की तैयारी के तहत हो रहा है। 2020 के गलवान घाटी संघर्ष के बाद भारत ने अपनी रक्षा रणनीति में बड़ा बदलाव किया है। द वॉल स्ट्रीट जर्नल की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत सैकड़ों मिलियन डॉलर खर्च कर हिमालय में बुनियादी ढांचे को मजबूत कर रहा है, ताकि सीमा पर अपनी स्थिति को मजबूत किया जा सके। 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच हिंसक झड़प हुई थी। इस संघर्ष में 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए, जबकि चीन की ओर से भी भारी नुकसान हुआ। यह 45 वर्षों में पहली बार था जब सीमा पर गोलीबारी के बिना हाथापाई हुई।

न्योमा एयरबेस और हवाई कनेक्टिविटी

भारत ने सीमावर्ती क्षेत्रों में हवाई कनेक्टिविटी भी बड़े पैमाने पर बढ़ाई है। लद्दाख में 14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित न्योमा एयरबेस चीन सीमा से मात्र 19 मील दूर है। यहां टी-130ए जैसे बड़े विमान उतर सकते हैं। यह रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। भारत ने 30 से अधिक हेलिपैड बनाए हैं और कई हवाई पट्टियों का निर्माण या अपग्रेड किया है। अन्य परियोजनाओं में अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और उत्तराखंड में सड़कें और पुल शामिल हैं। हाल ही में 125 परियोजनाओं का उद्घाटन हुआ, जिनमें श्योक सुरंग और कई पुल शामिल हैं।

प्रमुख परियोजनाएं
हिमालय को मजबूत बनाना

भारत की बॉर्डर रोड्स ऑर्गनाइजेशन इस अभियान की रीढ़ है। 2025 में बीआरए का बजट 810 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। हजारों किलोमीटर सड़कें, दर्जनों हेलीपैड और कई हवाई अड्डे बनाए जा रहे हैं। यह सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना है। 11,500 फीट की ऊंचाई पर बन रही यह 14 किलोमीटर लंबी सुरंग 750 मिलियन डॉलर से अधिक की लागत वाली है। 2020 के संघर्ष के बाद निर्माण शुरू हुआ। पूरा होने के बाद यह सुरंग लद्दाख तक सालभर आवाजाही सुनिश्चित करेगी। अभी भारी बर्फबारी के चलते लद्दाख कई-कई महीनों तक कट जाता है।

रेड कार्पेट से सख्त जवाबी तैयारी तक

स्टिमसन सेंटर के सीनियर फेलो डैनियल मार्के के हवाले से लिखा कि कभी भारत में यह धारणा थी कि सीमावर्ती इलाकों में बड़ी सड़कों का निर्माण सैन्य दृष्टि से नुकसानदेह हो सकता है- मानो किसी संभावित आक्रमण के लिए रेड कार्पेट बिछा दिया जाए लेकिन 2000 के दशक के मध्य से यह सोच बदलने लगी, खासकर तब जब चीन ने तिब्बत और शिनजियांग में सड़क और रेल नेटवर्क का तेजी से विस्तार किया। विशेषज्ञों का मानना है कि बढ़ता बुनियादी ढांचा और गश्त विवादित क्षेत्रों- जैसे पेंगोंग त्सो में टकराव की आशंकाएं भी बढ़ा सकता है, जहां दोनों सेनाएं अलगाव समझौतों के बावजूद मौजूद हैं।

पुलिस के लिए बड़ा कदम उठाने की तैयारी

- अमित शाह बोले-कॉमन एटीएस की जरूरत

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने आतंकवाद की चुनौती से निपटने के उद्देश्य से पूरे देश के लिए साझा आतंकवाद रोधी दस्ता (एटीएस) बनाए जाने पर जोर दिया। शुक्रवार को उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अभेद्य और मजबूत आतंकवाद निरोधी ग्रिड बनाना है, जो हर तरह की चुनौती का सामना कर सके। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में हम संगठित अपराध पर 360 डिग्री प्रहार करने की योजना बना रहे हैं। अमित शाह ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी के दो दिन के आतंकवाद रोधी सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद कहा,एनआईए ने बहुत मेहनत कर एक साझा एटीएस स्ट्रक्चर बनाकर राज्यों की पुलिस को भेजा है। जब हम पूरे देश का कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर बनाते हैं, तब हर लेयर पर समान तैयारी

का हमें मौका मिलता है। देशभर की पुलिस के लिए एक कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर बहुत जरूरी है और सभी राज्यों के पुलिस महानिदेशकों को इसका जल्द से जल्द पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी राज्यों की एटीएस को नेटग्रिड के इस्तेमाल की आदत डालनी चाहिए। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर और संचालन एकरूपता आतंकवादियों को कठघरे में खड़ा करने में फायदा देती है। उन्होंने कहा,जब तक हम ऑपरेशनल यूनिफॉर्मिटी नहीं लाते तब तक हम खतरे का सही आंकलन, इंटेलीजेंस शेयरिंग का सही उपयोग और कोऑर्डिनेटेड काउंटर एक्शन नहीं ले सकते। हमें जांच से लेकर अभियोजन और काउंटर एक्शन तक यूनिफॉर्मिटी को सुनिश्चित करना है। गृह मंत्री ने इस अवसर पर एनआईए की ओर से अपडेट अपराध मैनुअल, हथियार ई-डेटाबेस और संगठित अपराध नेटवर्क डेटाबेस की भी शुरुआत की।

- भारत में महिला सुरक्षा चुनौती, घरेलू हिंसा सबसे बड़ा अपराध

सर्वे में 40 फीसदी महिलाएं शहरों में असुरक्षित महसूस करती हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में महिलाओं की सुरक्षा 2025 में भी एक जटिल चुनौती बनी हुई है, जहां आधिकारिक अपराध आंकड़े स्थिरता दिखाते हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर अनरिपोर्टेड हिंसा और असुरक्षा की भावना व्यापक है। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं के खिलाफ अपराध के 4,48,211 मामले दर्ज किए गए, जो 2022 के 4,45,256 मामलों से मामूली बढ़ोतरी दर्शाता है। राष्ट्रीय अपराध दर प्रति लाख महिलाओं पर 66.2 रही, जबकि पति या रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता (29.8 फीसदी) सबसे प्रमुख श्रेणी बनी हुई है। ये आंकड़े केवल उन घटनाओं को ही प्रतिबिंबित करते हैं जो पुलिस तक पहुंचती हैं। वास्तविकता इससे कहीं अधिक गंभीर है। राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) की नेशनल एनुअल रिपोर्ट एंड इंडेक्स ऑन विमेंस सेफ्टी (एनएआरआई) 2025 के सर्वे में, 31 शहरों में 12,770 महिलाओं से बातचीत के आधार पर पाया कि राष्ट्रीय सुरक्षा स्कोर 65 है, लेकिन 40 महिलाएं खुद को शहरों में असुरक्षित महसूस करती हैं।

- घरेलू हिंसा, सार्वजनिक उत्पीड़न में अक्सर रिपोर्ट दर्ज नहीं होती- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5, 2019-21) के आंकड़े भी यही अंतर उजागर करते हैं: लगभग 32 फीसदी विवाहित महिलाओं ने जीवनकाल में पति से शारीरिक, यौन या भावनात्मक हिंसा का सामना किया। घरेलू हिंसा, सार्वजनिक उत्पीड़न, ऑनलाइन धमकियां और ज्ञात अपराधियों द्वारा दुर्व्यवहार अक्सर रिपोर्ट नहीं होते, क्योंकि सामाजिक दबाव, परिवार का सम्मान, पुलिस पर अविश्वास और लंबी कानूनी प्रक्रिया बोलने की कीमत बढ़ा देते हैं।

यूपी में जातिगत गोलबंदी नहीं की जाएगी बर्दाश्त

- ब्राह्मण विधायकों की भोज बैठक पर पंकज चौधरी की चेतावनी

मथुरा (एजेंसी)। यूपी बीजेपी का अध्यक्ष बनने के बाद केंद्रीय राज्य मंत्री पंकज चौधरी शनिवार को विश्व प्रसिद्ध ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में दर्शनों के लिए वृंदावन पहुंचे। मंदिर में माथा टेकने और पूजा-अर्चना करने के बाद पंकज चौधरी ने मीडिया से बातचीत में कहा कि 2027 में एक बार फिर बीजेपी उत्तर प्रदेश के अंदर अपनी पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा कि जनता का भरोसा और आशीर्वाद बीजेपी के साथ है। यूपी में किए जा रहे विकास कार्य और प्रदेश की कानून व्यवस्था बीजेपी की प्रचंड जीत का आधार बनेगी। इस दौरान पंकज चौधरी ने विपक्ष के बयानों और लखनऊ में हुई बीजेपी के ब्राह्मण विधायकों की बैठक के मुद्दे पर भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि हाल ही में हुई ब्राह्मण विधायकों की अलग बैठक और उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों पर प्रदेश संगठन ने कड़ा रुख अपनाया है।

भारत ने चिनाब नदी पर एक और परियोजना को दी मंजूरी

सिंधु समझौते का राग अलापता रह गया पाक

श्रीनगर (एजेंसी)। भारत ने जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में चिनाब नदी पर 260 मेगावाट की दुलहस्ती स्टेज-जलविद्युत परियोजना को पर्यावरण मंजूरी दे दी है। पर्यावरण मंत्रालय के अंतर्गत विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति (ईएसी) ने इस महीने की शुरुआत में अपनी 45वीं बैठक में इस रन-ऑफ-द-रिवर परियोजना के लिए मंजूरी दी, जिसकी अनुमानित लागत 3,200 करोड़ रुपये से अधिक है। यह मंजूरी निर्माण टेंडर जारी करने का रास्ता साफ करती है। पाकिस्तान लंबे समय से सिंधु जल समझौते का राग अलापता रहा है, लेकिन भारत के ताजा कदमों से उसकी चिंताएं और बढ़ गई हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि समझौते के निलंबन से भारत को पश्चिमी नदियों पर अधिक स्वतंत्रता मिली है, जिससे जल सुरक्षा और ऊर्जा उत्पादन में मजबूती आएगी।

मिला झटका

जानकारी के अनुसार, समिति ने नोट किया कि चिनाब बेसिन का जल भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 की सिंधु जल संधि के प्रावधानों के अनुसार साझा किया जाता था और परियोजना के पैरामीटर संधि के अनुरूप योजना बनाई गई थी। हालांकि, सिंधु जल संधि 23 अप्रैल 2025 से प्रभावी रूप से निलंबित है। सिंधु जल संधि लागू होने के दौरान पाकिस्तान को सिंधु, झेलम और चिनाब नदियों पर अधिकार थे, जबकि भारत को रावी, ब्यास और सतलुज पर। संधि के निलंबन के साथ अब केंद्र सरकार सिंधु बेसिन में कई जलविद्युत परियोजनाओं को तेजी से आगे बढ़ा रही है जैसे सावलकोटे, रतले, बुरसर, पाकल दुल। दुलहस्ती स्टेज-मौजूदा 390 मेगावाट की दुलहस्ती स्टेज- जलविद्युत परियोजना (दुलहस्ती पावर स्टेशन) का विस्तार है, जो नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनएचपीसी) द्वारा 2007 में चालू की गई थी और सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। योजना के तहत, स्टेज-ए पावर स्टेशन से पानी को 3,685 मीटर लंबी और 8.5 मीटर व्यास वाली अलग सुरंग से डायवर्ट होगा।

एक साल में 40 लाख से ज्यादा यात्रियों ने एयरपोर्ट से सफर किया, नए बदलाव

इंदौर। देश का सबसे स्वच्छ शहर और मध्य प्रदेश की व्यावसायिक राजधानी इंदौर अब ट्रैवल हब भी बन गया। हर साल लाखों की संख्या में यहां से लोग हवाई सफर कर रहे हैं। इंदौर के देवी अहिल्या बाई एयरपोर्ट ने अपने अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। 87 साल में ये पहली बार है, जब मात्र 1 साल में 40 लाख से ज्यादा लोगों ने सफर किया। एयरपोर्ट अथॉरिटी के अनुसार 1 जनवरी 2025 से 30 नवंबर 2025 के बीच 40,47,358 यात्रियों ने इंदौर से उड़ान भरी और लैंड किया। यह आंकड़ा केवल 11 महीनों का है, जबकि दिसंबर में भी इसी रफ्तार से यात्री सफर कर रहे हैं। इंडिगो क्राइसिस की वजह से थोड़ा सा डाउनफॉल जरूर देखा गया था, जब इंदौर से 7-8 फ्लाइट कैंसिल हुई थी।

रोज इतने यात्रियों का सफर

आंकड़ों के अध्ययन से पता चला कि हर दिन इंदौर एयरपोर्ट से लगभग 11,000 लोगों ने सफर किया, जबकि 82 फ्लाइट्स ने प्रतिदिन लैंडिंग और टेकऑफ किया। इस दौरान नवंबर 2025 अब तक का सबसे व्यस्त महीना रहा, जिसमें अकेले 4.23

अगली फरवरी से इंदौर एयरपोर्ट से 24 घंटे लैंड को टेक ऑफ होगा

लाख यात्रियों ने सफर किया। वहीं, सितंबर में सबसे कम 3.35 लाख लोगों ने यात्रा की। इंदौर एयरपोर्ट का यह अब तक का सर्वाधिक रिकॉर्ड है, इससे पहले 2019 में 30.24 लाख, 2023 में 35.39 लाख की यात्रियों ने एयरपोर्ट से सफर किया था। आश्चर्य की बात ये कि रिकॉर्ड तब बना है, जब एयरपोर्ट पर रनवे के रख-रखाव का काम चल रहा, जिस वजह से रोजाना यह 8 घंटे रात 10:30 से सुबह 6:30 बजे तक रनवे बंद रहता है। हालांकि, जल्दी यह काम भी पूरा हो जाएगा और फरवरी 2026 से 24 घंटे इंदौर एयरपोर्ट से लैंड को टेक ऑफ हो सकेगा।

सिंहस्थ के लिए बड़ा प्लान

2028 के सिंहस्थ को ध्यान में रखते हुए मास्टर प्लान तैयार किया गया है। अगले कुछ सालों में इंदौर एयरपोर्ट की क्षमता को 1 करोड़ यात्री प्रति वर्ष तक ले जाने की तैयारी है। इसके लिए नए टर्मिनल और रनवे विस्तार पर काम शुरू हो चुका। फिलहाल, इंदौर से देश के हर बड़े शहर के लिए डायरेक्ट कनेक्टिविटी है, जिसका सबसे बड़ा लाभ स्थानीय व्यापारियों को मिलता है। हाल ही में इंदौर एयरपोर्ट को सर्विस क्वालिटी के मामले में देश में नंबर वन की जगह मिली है।

यहां के उड़ रहीं फ्लाइट्स

इन बड़े शहरों के लिए सीधी कनेक्टिविटी इंदौर एयरपोर्ट से शारजाह तक की फ्लाइट चलती है। कुछ समय बाद दुबई और अन्य देशों के लिए भी फ्लाइट्स चलाए जाने की योजना है। फिलहाल, दिल्ली, मुंबई, पुणे, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, चंडीगढ़, जम्मू, जयपुर, जोधपुर, रीवा, जबलपुर, ग्वालियर, रायपुर, कोलकाता समेत देश के 20 अधिक शहरों के लिए सीधी फ्लाइट मौजूद है।

टास्क, लोन की ओटीपी के नाम पर चपत

इंदौर। शहर में साइबर ठग नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। शेयर ट्रेडिंग में त्वरित मुनाफा, ऑनलाइन टास्क और बैंक अधिकारी बनकर लोन दिलाने या ओटीपी मांगने जैसे हथकंडों से ठगों ने कई लोगों की मेहनत की कमाई लूट ली। अलग-अलग थाना क्षेत्रों में सामने आए मामलों में लाखों रुपए की धोखाधड़ी हुई है। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर तकनीकी जांच शुरू कर दी है। एरोड्रम पुलिस को वहीं की रहने वाली सलोनी नांदोकार ने बताया कि उसके साथ पिछले दिनों कथित ठग ने वीआईपी मेंबरशिप और टास्क के नाम पर एक लाख 63 हजार 600 रुपए निवेश कराए थे। निवेश के बाद उसे प्राफिट नहीं मिला तो उसने पुलिस की शरण ली। इसी तरह का झांसा देकर अंजनी नगर के तुषार दुबे से 1 लाख 42 हजार रुपए ऐंठे गए। जब पीड़ितों ने पैसे वापस मांगे तो ठगों ने निवेश डूबने की धमकी देकर और रकम की मांग की। लसूडिया क्षेत्र के लोकेंद्र तोमर को बैंक कर्मचारी बनकर कॉल किया गया और लोन प्रोसेसिंग फीस के नाम पर 18 ट्रांजेक्शन में 5 लाख 18 हजार रुपये निकलवा लिए गए। शिवाजी नगर में अशोक घाडगे से बैंक अधिकारी बनकर ओटीपी हासिल किया गया, जिससे उनका फोन हैंग हो गया और खाते से 1 लाख 27 हजार रुपये साफ हो गए। पुलिस ने सभी मामलों में ठगों के खाते फ्रीज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है।

अवैध हथियारों के साथ दो बदमाश गिरफ्तार

इंदौर। शहर में बढ़ते अपराध पर नियंत्रण के लिए तेजाजी नगर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके पास से अवैध हथियार और चोरी में इस्तेमाल होने वाले औजार बरामद किए हैं। पुलिस को सूचना मिली थी कि मछली फार्म तालाब के पास कुछ संदिग्ध लोग किसी वारदात की तैयारी कर रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की और दो आरोपियों को हिरासत में ले लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान आकेश पिता अर्जुन बघेल निवासी बड़ी कदवाल जिला अलीराजपुर और शेरू पिता हीरू वसुनिया निवासी मसानिया फलिया जिला धार के रूप में हुई है। तलाशी के दौरान आकेश के पास से एक देशी कट्टा और 8 जिंदा कारतूस बरामद किए गए, जबकि शेरू के पास से लोहे की टॉमी और पत्ती मिली, जिनका इस्तेमाल आमतौर पर ताले तोड़ने और चोरी में किया जाता है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ अवैध हथियार रखने सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ जारी है। पुलिस को उम्मीद है कि पूछताछ में अन्य आपराधिक घटनाओं से जुड़े अहम सुराग भी सामने आ सकते हैं।

इन्फ्लुएंसर को जान से मारने की धमकी

इंदौर। शहर में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के बीच चल रहा विवाद अब गंभीर रूप लेता नजर आ रहा है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर वीर शर्मा को जान से मारने की धमकी मिलने का मामला सामने आया है। इस संबंध में उन्होंने एमआईजी थाना पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है। वीर शर्मा का कहना है कि हाल ही में उन्होंने सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर धर्मेंद्र बिलोठिया से जुड़े कुछ वीडियो और बयानों पर सार्वजनिक टिप्पणी की थी। इसके बाद उनके मोबाइल पर एक कॉल आया, जिसमें कॉल करने वाले ने धमकी दी कि यदि उन्होंने आगे कुछ कहा तो उनकी जान ले ली जाएगी। इसके साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी उन्हें लगातार धमकी भरे संदेश मिल रहे हैं। फरियादी वीर शर्मा के अनुसार, ह्वरामबाबू गडरियाह्व नाम की आईडी से भी जान से मारने की धमकी दी गई है, जिससे उनकी सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। उनका आरोप है कि धर्मेंद्र बिलोठिया के दुबई से जुड़े विवाद पर टिप्पणी करने के बाद से ही यह सिलसिला शुरू हुआ। मामले की गंभीरता को देखते हुए एमआईजी थाना पुलिस ने आवेदन के आधार पर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि कॉल डिटेल्स और सोशल मीडिया अकाउंट्स की जांच की जा रही है। बता दें, इसके पहले हीरानगर थाना क्षेत्र में ?इन्फ्लूएंसर के विवाद का वीडियो वायरल हुआ था।

आरके क्लब बंद होने की बात झूठी निकली

इंदौर। न्यू ईयर सेलिब्रेशन को लेकर पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है। इसके बावजूद आरके क्लब में नियमों का उल्लंघन हो रहा था। पुलिस कार्रवाई से बचने क्लब संचालक ने बाहरी गेट पर ताला लगवा दिया था, लेकिन पुलिस की पैनी नजर से उसकी करतूत छुप नहीं सकी। पुलिस ने संचालक पर केस दर्ज कर लिया है। विजयनगर पुलिस की टीम क्रिसमस पर चेकिंग अभियान चला रही थी। इसी क्रम में टीम आरके क्लब की जांच के लिए पहुंची। पुलिस को देखकर क्लब संचालक ने नियमों का उल्लंघन करते हुए बाहरी शटर पर ताला लगा दिया और क्लब बंद होने की बात कही। हालांकि पुलिस पहले से निगरानी कर रही थी। निर्धारित समय के बाद क्लब खुलवाकर जांच की गई, जहां नियमों के विपरीत संचालन पाया गया। इस पर क्लब संचालक मिथलेश कुमार एवं मैनेजर अमित कुमार पर प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्रवाई की गई। उल्लेखनीय है कि विजयनगर पुलिस ने क्षेत्र के सभी क्लब, पब और अन्य संस्थानों को सख्त चेतावनी दी है कि वे माननीय सर्वोच्च न्यायालय, कलेक्टर, पुलिस कमिश्नरेट एवं अन्य विभागों द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन करें, अन्यथा उनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

हमले के दो और आरोपी गिरफ्तार

इंदौर। विजयनगर थाना क्षेत्र में जज के डॉक्टर भाई की कार पर हुए हमले के मामले में पुलिस ने दो और आरोपियों आसिफ और जाहिद को गिरफ्तार किया है। जांच में सामने आया है कि आरोपी जाहिद हत्या के मामले में 15 साल की सजा काटकर हाल ही में जेल से बाहर आया था और रिहा होते ही दोबारा अपराध की दुनिया में लौट गया। पुलिस की पूछताछ में खुलासा हुआ कि डॉक्टर पर हमले की सुपारी 50 हजार नहीं बल्कि एक लाख रुपए में दी गई थी। इस पूरे हमले की साजिश जेल में बंद कुख्यात बदमाश हेमंत यादव ने रची थी। हेमंत ने जेल से ही अपने साथियों के जरिए हमले की योजना बनाई। गिरफ्तार आरोपी जाहिद, जेल से बाहर आते ही साजिद और मोहसिन के गैंग में शामिल हो गया था। हमले के लिए पैसों की व्यवस्था हेमंत के ड्राइवर विशाल भंडारी ने की थी। पुलिस अब मुख्य साजिशकर्ता हेमंत यादव को प्रोटेक्शन वारंट पर जेल से लाकर पूछताछ करेगी, ताकि पूरे गिरोह का पदार्फाश किया जा सके।

गार्डन में मनचले ने की छात्रा से छेड़छाड़, पुलिस में मामला दर्ज

इंदौर। शहर में लगातार छेड़छाड़ के मामले सामने आ रहे हैं। मनचले अब बगीचे में घुमने वाली महिलाओं, छात्राओं से भी छेड़छाड़ करने से बाज नहीं आ रहे। ऐसा ही एक मामला एरोड्रम थाना क्षेत्र में सामने आया। यहां सुबह गार्डन में घूम रही छात्रा से मनचले ने हरकत की। छात्रा ने शोर मचाया तो रहवासी गार्डन पहुंचे। इसी दौरान बदमाश वहां से भाग निकला। पुलिस ने अज्ञात मनचले पर केस दर्ज कर लिया है। घटना बुधवार रात करीब 9 बजे की है। पीड़ित छात्रा ने बताया कि वह अंबिका नगर स्थित गार्डन में अपनी मां और बहन के साथ आई थी और वहां लगी एक्सरसाइज मशीनों के पास खेलने की जिद कर रही थी। कुछ देर बाद उसकी मां और बड़ी बहन गेट की ओर चली गईं और उसे भी बुलाया, लेकिन छात्रा ने थोड़ी देर में आने की बात कही। इसी दौरान गार्डन में टहल रहा एक युवक उसके पास पहुंचा और उसका हाथ पकड़कर बोला कि घरवालों को जाने दो, हम थोड़ी देर बात कर लेते हैं। युवक की हरकत देखकर छात्रा घबरा गई और जोर से चिल्लाने लगी, जिस पर आरोपी मौके से भाग निकला।

पांच मुस्लिम युवकों पर दो हिंदू युवतियों से दुष्कर्म का केस दर्ज

पीड़िता ने बताया कि उन्हें ड्रग्स दी और गर्भपात कराया

इंदौर। हिंदू युवतियों से सामूहिक दुष्कर्म के दो मामले दर्ज किए गए। पुलिस ने पांच मुस्लिम युवकों के खिलाफ दोनों मामलों में एफआईआर दर्ज की है। एक पीड़िता ने उसे ड्रग्स देने और गर्भपात करवाने का भी आरोप लगाया। पीड़िता के साथ मारपीट भी की गई। एरोड्रम पुलिस ने भी दो मुस्लिम युवकों के खिलाफ सामूहिक दुष्कर्म का केस दर्ज किया। पहले मामले में लसूड़िया थाना इलाके की स्कीम-134 निवासी 25 वर्षीय युवती ने आरोपी एजाज खान (शराफत नगर), फारुख खान (शराफतनगर) और शहजाद खान निवासी मानवता नगर के खिलाफ एफआईआर केस दर्ज करवाई।

पुलिस के अनुसार पीड़िता की साल 2020 में खजराना निवासी युवक से शादी हुई थी। उसका एक बेटा भी है। कुछ समय पूर्व उसका पति से विवाद हो गया और पति से तलाक का केस चल रहा है। पीड़िता ने एडवाइजरी फर्म में नौकरी की और इसी दौरान एजाज खान से दोस्ती हो गई। आरोपी ने शादी करने और बच्चे की जिम्मेदारी लेने का झांसा दिया और न्यायनगर के खजराना में रहने लगी। इसके बाद मानवतानगर में दोस्त शहजाद खान के रूम पर लेकर आ गया।

आरोपी शहजाद ने भी पीड़िता के साथ जबरदस्ती की। आरोप है कि एजाज खान ने उसके साथ मारपीट करना शुरु कर दी। बुधवार को एजाज के भाई फारुख ने रेडिसन होटल के सामने मारपीट कर दी। गुरुवार को पीड़िता ने हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं से मदद मांगी और लसूड़िया थाने में शून्य पर कायमी करवाई। मुस्लिम युवकों पर गैंगरेप का आरोप दर्ज किया गया। इस मामले का एक आरोपी जेल में है। एरोड्रम पुलिस ने गुरुवार को दो मुस्लिम युवकों के खिलाफ सामूहिक दुष्कर्म का केस दर्ज किया है। रेप पीड़िता हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ पहुंची थी।

क्रिप्टो निवेश के नाम पर युवक से 8 लाख रू. की धोखाधड़ी की गई

युवती ने फेसबुक पर दोस्ती शुरू हुई फिर की गई ठगी

इंदौर। युवक फेसबुक पर हुई दोस्ती के बाद साइबर ठगी का शिकार हो गया। ठगों ने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश का झांसा देकर पहले भरोसा जीता और फिर 8 लाख रुपए की ठगी कर ली। मुनाफे के नाम पर युवक को 42 लाख रुपए का फर्जी प्रॉफिट दिखाया गया। राजेन्द्र नगर पुलिस ने शिव सागर कॉलोनी निवासी नीरज भागवत की शिकायत पर सुनीता कुमारी समेत अन्य अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, फरियादी नीरज प्राइवेट नौकरी करते हैं। अगस्त महीने में सुनीता नाम की युवती ने उन्हें फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी। धीरे-धीरे बातचीत बढ़ी और चैटिंग व्हाट्सएप तक पहुंच गई। करीब एक महीने तक बातचीत कर भरोसा बनाने के बाद युवती ने यूएसडीटी क्रिप्टो करेंसी में निवेश का प्रस्ताव दिया। उसने कंपनी का लिंक भेजा, जिसके जरिए नीरज की ट्रेडिंग आईडी बनाई गई। इसके बाद बलवीर नामक व्यक्ति उनसे संपर्क में आया और निवेश प्रक्रिया समझाने लगा।

पहले मुनाफा, फिर लालच- शुरूआत में नीरज से 15 हजार रुपए निवेश करवाए गए, जिसमें 2500 रुपए का मुनाफा दिखाया गया। इससे नीरज का भरोसा बढ़ गया। इसके बाद एक नए लिंक और एग्रीमेंट के जरिए 21 हजार रुपए और ट्रांसफर करवाए गए। बलवीर को कमीशन देने के बाद नीरज के अकाउंट में 62 हजार रुपए का प्रॉफिट दिखाया गया। ठगों ने 5 दिन की ट्रेडिंग का झांसा दिया। चौथे दिन तक जब कोई मुनाफा नहीं हुआ तो नीरज ने ट्रेडिंग बंद करने की बात कही। इस पर ठगों ने नियमों का हवाला देते हुए कहा कि ट्रेडिंग छोड़ने पर पहले मिले मुनाफे का 50 प्रतिशत जुमार्ना देना होगा। पांचवें दिन नीरज के अकाउंट में 42 लाख रुपए का मुनाफा दिखाया गया, लेकिन रकम निकालने के लिए 30 प्रतिशत कमीशन यानी करीब 12 लाख रुपए जमा करने की मांग कर दी गई।

शक होते ही अकाउंट फीज

इस मांग के बाद नीरज को ठगी का एहसास हुआ और उन्होंने पैसे देने से इनकार कर दिया। इसके बाद आरोपियों ने उनका ट्रेडिंग अकाउंट फ्रीज कर दिया। नीरज के अनुसार, पूरे मामले में उनसे अलग-अलग खातों में करीब 8 लाख रुपए ट्रांसफर करवा लिए गए। पीड़ित ने साइबर सेल और राजेन्द्र नगर थाने में शिकायत दर्ज कराई। जांच के बाद पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है और ठगी के पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है।

इंदौर हाईकोर्ट की खंडपीठ में 41 नए सरकारी वकीलों ने चार्ज लिया

इसमें रिटायर डीएसपी शामिल, तीन एडिशनल वकील बने

इंदौर। राज्य सरकार के विधि और विधायी कार्य विभाग ने मप्र हाईकोर्ट की इंदौर बेंच में सरकार की ओर से पैरवी के लिए घोषित नई सूची में इस साल भी तीन एडिशनल एडवोकेट बनाए गए। इसी तरह तीन डिप्टी एडवोकेट जनरल भी बने हैं। इस सूची में एक रिटायर डीएसपी भी सरकारी वकील बने हैं। इस तरह 41 सदस्यीय नई टीम नियुक्त की गई। इन सभी ने शुक्रवार को हाई कोर्ट परिसर स्थित महाधिवक्ता कार्यालय में पदभार ग्रहण कर लिया प्रदेश के विधि और विधाई कार्य विभाग के अतिरिक्त सचिव प्रवीण हजारे द्वार जारी सूची में अतिरिक्त महाधिवक्ता के तौर पर राहुल सेठी ओर आशीष यादव के साथ ही पूर्व से इसी पद पर काम कर रहे सोनल गुप्ता को नियुक्त किया गया है।

गुप्ता की पदस्थापना जबलपुर खंडपीठ से करके उन्हें इंदौर अटैच किया गया है। राहुल सेठी सीनियर एडवोकेट एके सेठी के पुत्र हैं। आशीष यादव मूल रूप हरदा के हैं जो मुख्यमंत्री के रिश्तेदार बताए जा रहे हैं। इसी तरह कुशल गोयल, सुदीप भार्गव एवम श्रेयराज सक्सेना को उप महाधिवक्ता बनाया गया है। ये तीनों ही पुरानी सूची में भी थे। इनमें श्रेयराज की पोस्टिंग जबलपुर हाई कोर्ट से होकर इंदौर अटैच किया गया है। सूची में सरकारी वकील के रूप में जय गोपाल चौकसे का नाम भी है जो पुलिस विभाग से डीएसपी के रूप में रिटायर हुए हैं। वे इंदौर में कई थानों पर टीआई भी रहे हैं। ऐसे ही इंदौर के पूर्व कलेक्टर मनीष सिंह के पुत्र कुशाग्र सिंह का नाम डिप्टी जीए की सूची में है।

सूची में पुराने अधिकांश नाम बदल दिए गए हैं। यह सूची लंबे समय से टलती आ रही थी। पहले दो मर्तबा एक- एक माह और उसके बाद तीन माह के लिए पूर्व में की गई नियुक्तियों का समय बढ़ाया जाता रहा। यह अवधि 31 दिसंबर को समाप्त हो रही थी, उसके पहले ही नए नियुक्त एडिशनल एडवोकेट जनरल, डिप्टी एडवोकेट जनरल सहित शासकीय अधिवक्ताओं ने शुक्रवार को पदभार ग्रहण कर लिया।

ये बने सरकारी वकील

उषा चौहान, राजवर्धन गावडे, अमित भाटिया, आयुष्मान चौधरी, सुरेंद्र कुमार गुप्ता, दिनेश सिंह चौहान, भाग्यश्री गुप्ता, गजेंद्र सिंह डोडिया, अम्बुज पटेल, सुनील कपूर, विराज गोधा, अभिमन्यु सिंह, आदित्य वैभव सिंह, जयगोपाल चौकसे, दृष्टि रावल, प्रद्युम्न किबे, भास्कर अग्रवाल, प्रशांत जैन, अंशुल राजपुरोहित, हेमंत कुमार शर्मा, आदित्य गर्ग, मनीष कुमार सांखला, राजेन्द्रसिंह सूर्यवंशी, रोमिल वर्मा, हरीशसिंह राठौर, तरुण पगारे, गौरव रावत, राहुल सोलंकी। इसके अलावा सुरेंद्रपाल सिंह अलावा, विजय नागपाल, कुशाग्र सिंह, प्रांजलि यजुर्वेदी, अनूप सोनकर एवम ऐश्वर्या सिंह उप शासकीय अधिवक्ता बनाए गए।

बिना हेलमेट वाले 558 और 248 ऑटो, ई-रिक्शा के चालान बनाए

ऑटो एवं ई-रिक्शा चालकों के खिलाफ विशेष मुहिम चलाई

इंदौर। बिना हेलमेट चलने वाले वाहन चालकों, ऑटो-ई रिक्शा सहित नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाइयां जारी है। शुक्रवार को ट्रैफिक पुलिस ने विशेष अभियान चलाया और 558 टू व्हीलर चालकों के खिलाफ कार्रवाई की गई। ट्रैफिक पुलिस ने जनता से अपील की है कि है अपने और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए हेलमेट पहने, क्योंकि रोड पर सुरक्षा ही सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

ट्रैफिक पुलिस ने ऑटो एवं ई-रिक्शा चालकों के खिलाफ विशेष मुहिम चलाई। इस दौरान प्रतिबंधित मार्ग का उल्लंघन, वन-वे, ओवरलोडिंग तथा नो पार्किंग, दस्तावेज जैसे ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वाले 207 ई रिक्शा और 39 ऑटो कुल 248 पर सख्त कार्रवाई की गई। पुलिस ने ऑटो-ई रिक्शा चालकों से ट्रैफिक नियमों का पालन करने की अपील की है।

139 गाड़ियों के भी चालान - शहर के विभिन्न प्रमुख रास्तों, बाजार क्षेत्रों तथा व्यस्त चौराहों पर विशेष अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान 139 वाहनों जो नो पार्किंग क्षेत्रों में वाहन खड़े कर ट्रैफिक अवरुद्ध करते पाए गए। इन वाहनों की गलत पार्किंग के कारण लोगों को आने जाने में कठिनाई हो रही थी एवं कई स्थानों पर जाम की स्थिति भी बन रही थी। ट्रैफिक पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर नो पार्किंग में खड़े ऑटो/ई रिक्शा, कार, बस आदि वाहनों के चालान किए। रास्ता बाधित करने वाले वाहनों को हटवाया ने की कार्रवाई की।

छात्रा को आत्महत्या के लिए उकसाने वाले दोस्त पर प्रताड़ना का केस दर्ज

दूसरे युवकों से बातचीत करने पर लिवइन पार्टनर से विवाद हुआ

इंदौर। लिव इन में रह रही छात्रा को आत्महत्या के लिए उकसाने और प्रताड़ित करने वाले दोस्त पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। आत्महत्या से पहले छात्रा ने दोस्त के खिलाफ बयान दिए थे। आत्महत्या के पीछे दूसरे युवकों से बातचीत करने पर विवाद होना बताया गया है। खजराना पुलिस के मुताबिक, छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या की थी। पुलिस को छात्रा के दोस्त हर्ष मिश्रा ने पूछताछ में बताया कि मृतका जागृति के दूसरे युवकों से बातचीत करने को लेकर उनके बीच अक्सर विवाद होता था। घटना वाली रात भी इसी बात को लेकर दोनों में कहासुनी हुई थी। विवाद बढ़ने पर वह कमरे से बाहर निकलकर दूसरे कमरे में चला गया। करीब दस मिनट बाद जब अंदर से कोई आवाज नहीं आई तो उसने झांककर देखा तो जागृति फंदे पर लटकी हुई थी। पुलिस के अनुसार, जागृति की मां ने बयान में बताया कि करीब 15 दिन पहले जागृति ने उनसे कहा था कि वह हर्ष से शादी करना चाहती है, लेकिन हर्ष उसे शादी को लेकर लगातार टाल रहा था और कथित रूप से उसे मानसिक रूप से परेशान कर रहा था। इस आधार पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की है। हर्ष भंवरकुआं क्षेत्र की निजी कंपनी में जॉब करता था और पिछले कुछ वर्षों से जागृति के संपर्क में था। 8 दिन पहले ही वह इंदौर आकर रहने लगा था। जब पुलिस ने जागृति के परिजनों को हर्ष के बारे में जानकारी दी तो वे बेहद आक्रोशित हो गए और बेटी की मौत को हत्या बताते हुए आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करने की।

रेस्टोरेंट में हुई थी पहचान- हर्ष और जागृति की पहचान रेस्टोरेंट में हुई थी, जिसके बाद दोनों लंबे समय से एक-दूसरे के संपर्क में थे और अक्सर मिलते-जुलते रहते थे। जागृति पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती थी। परिवार को यह जानकारी थी कि वह इंदौर गई हुई है। लेकिन, परिजनों का कहना है कि उन्हें अंदेशा नहीं था कि हर्ष उसके साथ ऐसा कदम उठाएगा। पुलिस जांच में सामने आया है कि जागृति उज्जैन के एमआईटी कॉलेज में पढ़ाई कर रही थी और मूल रूप से रीवा की रहने वाली थी। वह एक सप्ताह पहले इंदौर में दोस्त हर्ष के पास रहने आई थी। हर्ष मूल रूप से देवास का रहने वाला है।

मकान मालिक पर भी कार्रवाई- पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि इस मामले में साईं कृपा कॉलोनी में रहने वाले अभिषेक पिता प्रकाश चंद्र पाठक पर भी पुलिस ने कार्रवाई की है। उन्होंने बताया कि 8 दिन से रहने के बाद भी उन्होंने हर्ष को लेकर थाने पर जानकारी नहीं दी थी। उन पर प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्रवाई की गई है। एक सप्ताह पहले दोस्त के पास रहने आई 22 वर्षीय युवती ने आत्महत्या कर ली थी। बुधवार रात युवती का शव फंदे पर लटका मिला, जिसके बाद दोस्त ने उसे एमवाय अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया था।

समकालीन हिंदी कविता 2025

दीपक गिरकर
समीक्षक

जन के संघर्ष, पीड़ा और उम्मीदों की सशक्त अभिव्यक्ति

समकालीन हिंदी कविता की मूल पहचान जनपक्षधरता और सामाजिक बोध है। यह कविता मानव जीवन को उसकी सम्पूर्णता में स्वीकार कर सत्ता, अस्मिता और लोकतंत्र से जुड़े प्रश्नों पर सक्रिय हस्तक्षेप करती है। समकालीन हिंदी कविता अपने समय, समाज और राजनीति से गहराई से जुड़ी आत्मचेतस और जनपक्षधर अभिव्यक्ति है। यह कविता जीवन के अन्तर्विरोधों, संघर्षों और परिवर्तनशील यथार्थ को वास्तविक मनुष्य के अनुभवों के माध्यम से सामने लाती है। स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्शों के जरिए अस्मिता, अधिकार, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को उठाते हुए समकालीन कविता सत्ता, हिंसा और शोषण का प्रतिरोध करती है। 'मैं' से 'हम' की ओर बढ़ती यह कविता आम जन के संघर्ष, पीड़ा और उम्मीदों की सशक्त अभिव्यक्ति है, जो उसे निरंतर जीवंत और गतिशील बनाती है।

इस वर्ष राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित अशोक कुमार पांडेय का कविता संग्रह 'आवाज-बेआवाज' पढ़ा। 'आवाज़-बेआवाज़' की कविताएँ मानवीय और राजनीतिक सरोकारों का सघन संसार रचती हैं। कश्मीर से फिलिस्तीन, प्रेम से व्यर्थताबोध तक फैली ये रचनाएँ समकालीन सत्ता, जनतंत्र और मनुष्यता के संकट को निडरता से उजागर करती हैं, जिनके तीक्ष्ण बिम्ब और आन्तरिक तनाव देर तक स्मृति में बने रहते हैं। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित श्रुति कुशवाहा का कविता संग्रह 'सुख को भी दुख होता है' पढ़ा। श्रुति की कविता जीवन की बुझती आग को संतुलन और करुणा से सुलगाए रखने का प्रयत्न है। वैयक्तिक नैतिकता, आचरणगत परिवर्तन और सूक्ष्म प्रज्ञा में आस्था रखती ये कविताएँ प्रकृति, प्रेम और आत्मसंयम के माध्यम से गहरे मानवीय सत्य उजागर करती हैं, जिनमें वाक-संयम और अन्तःपाठीय संवाद एक विशिष्ट खनक रचते हैं। सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित 'किस-किस से लड़ोग' पंकज चौधरी का नवीन कविता संग्रह है, जिसमें कवि जीवन और समाज के उन पहलुओं को बेबाक़ी से सामने लाते हैं, जिनसे अधिकांश कवि परहेज़ करते हैं या टालते रहे हैं। उनकी कविताएँ साहसपूर्वक वास्तविकता और संघर्ष की गहराइयों में उतरती हैं, यही उनकी अनूठी पहचान है।

सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित युवा कवि वसु गंधर्व का कविता संग्रह 'वीतराग' स्मृति की मोहक आभा लिए हुए है। उनकी रचनाएँ अनंत, प्राचीन अनुभवों और जीवन के सूक्ष्म पक्षों को समेटती हैं, जिसमें संग-साथ और निस्संगता दोनों हैं। भाषा की चमक इन कविताओं की प्रमुख विशेषता है। सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित राजेंद्र टोकी का 'लम्हों की नदी' कविता संग्रह की कविताएँ जीवन के क्षणों और अनुभूतियों को बहते हुए प्रस्तुत कराती हैं। सरल और प्रभावशाली भाषा पाठक को अनुभवों की धारा में डुबो देती है और अपने जीवन के लम्हों को महसूस करने का अवसर देती है। न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन से प्रकाशित विद्या भंडारी के कविता संग्रह 'स्त्री स्लेट पर लिखा शब्द नहीं' की कविताएँ स्त्री-केंद्रित कविताएँ हैं जो जीवन के विविध रंगों और नारी शक्ति का चित्रण करती हैं। हर गोविन्द पुरी का कविता संग्रह 'दो शब्दों के बीच में छूटी हुयी जगह' जीवन और भाषा के सूक्ष्म अन्तरालों की अभिव्यक्ति करता है।

अक्टूबर 2025 में न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित यह संग्रह भाव, संवेदना और मौन के बीच के टूटते-बनते रिश्तों को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है। शिवना प्रकाशन से प्रकाशित पंकज सुबीर का कविता संग्रह 'उम्मीद की तरह लौटना तुम' 109 कविताओं का संवेदनशील संकलन है, जिसमें पिता की स्मृति और उनके जाने का शोक, प्रेम, प्रकृति और सामाजिक भावनाएँ मार्मिक रूप से उभरती हैं। कवि ने पिता-पुत्र के रिश्ते की जटिलताएँ, असहमति, पश्चाताप और प्रेम की गहराई को सहज भाषा में व्यक्त किया है। संग्रह की कविताएँ व्यक्तिगत पीड़ा के साथ-साथ सार्वभौमिक अनुभव का रूप लेती हैं। संग्रह में प्रेम, परिवार, प्रकृति और सामाजिक विडंबनाओं को संवेदनशीलता और कथ्यात्मक सहजता के साथ प्रस्तुत किया गया है। नवल जानी का कविता संग्रह 'अनकही बातें' (बोधि प्रकाशन, जयपुर) प्रेम, सौंदर्य, प्रकृति और जीवन के विविध पक्षों को सरल एवं प्रवाहमयी भाषा में प्रस्तुत करता है। संग्रह में सूक्ष्म भावनाओं और मार्मिक बिंबों का सुंदर प्रयोग है, जो पाठक को सहज ही कविताओं की दुनिया में डुबो देता है और जीवन के अनुभवों को नए दृष्टिकोण से महसूस कराता है।

सेतु प्रकाशन से प्रकाशित समकालीन हिन्दी कविताओं की प्रमुख हस्ताक्षर स्मिता सिन्हा के कविता संग्रह 'रुंधे कंठ की अभ्यर्थना' स्त्री विमर्श, सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज़ है। संग्रह में स्त्रियों की व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों, प्रेम, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान, पितृसत्ता और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की आवाज़ प्रमुख है। कविताएँ युद्ध, जातिवाद, शहरीकरण, पर्यावरण और

बच्चों की संवेदनशीलता जैसे समकालीन मुद्दों को भी उजागर करती हैं। स्मिता की भाषा सरल और प्रवाहमयी है, बिंबों में ताजगी और संवेदनाओं की गहराई है। प्रेम, विरह, संघर्ष और स्मृति की कविताएँ व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वभौमिक रूप देती हैं। यह संग्रह भावनाओं, सोच और सामाजिक चेतना का मिश्रण प्रस्तुत करता है, जो पाठक को सोचने, महसूस करने और संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित करता है। यह हिंदी कविता में स्त्री आवाज़ और सामाजिक जागरूकता का महत्वपूर्ण योगदान है। अंतिका प्रकाशन से प्रकाशित दुर्गा प्रसाद झाला का कविता संग्रह 'समय से जूझता समय' जीवन और समय के बीच के संघर्ष का मार्मिक दस्तावेज़ है। यह संग्रह न केवल व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिबिंब है, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक चिंतन का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। दुर्गाप्रसाद झाला ने कविताओं में समय, मानव मन और जीवन के विविध पहलुओं को इतनी संवेदनशीलता और स्पष्टता के साथ चित्रित किया है कि यह संग्रह हिंदी कविता के समकालीन परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। काव्य प्रकाशन से प्रकाशित चरण सिंह 'अमी' का कविता संग्रह 'डूबते गाँव एवं अन्य कविताएँ' ग्रामीण जीवन की वास्तविकता, मानवीय संवेदनाएँ और समकालीन सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को मार्मिक रूप में प्रस्तुत करता है। यह संग्रह गाँवों के बदलते परिदृश्य और वहाँ के लोगों के संघर्षों को सजीवता और गंभीरता के साथ उकेरता है। इसमें गाँवों के जलते और डूबते यथार्थ, समय की राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक व्यथाएँ, और मानवीय संवेदनाओं की मार्मिक प्रस्तुति मिलती है। हर कविता सीधे पाठक के दिल को छूती है और जीवन की वास्तविक झलक पेश करती है।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित कवि कृष्ण मोहन झा का कविता संग्रह 'तारों की धूल' समकालीन हिंदी कविता की संवेदनशील और सशक्त प्रस्तुति है। यह संग्रह न केवल व्यक्तिगत स्मृतियों और प्रेम की दास्तान कहता है, बल्कि समय, समाज और सत्ता पर स्पष्ट दृष्टि प्रस्तुत करता है। कवि अपने अनुभवों, प्रकृति, मिट्टी और तारों के प्रतीकों के माध्यम से पाठक को भीतर तक झकझोरने वाला काव्य संसार गढ़ते हैं। कृष्णमोहन झा की कविताएं स्मृति जीविता और वर्तमान अनुभव के बीच संतुलन बनाती हैं। वह समाज में शोषण, असमानता और अन्याय के खिलाफ सच बोलते हैं, और पाठक को सवाल पूछने तथा सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रेम, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं का मिश्रण इसे गहन और मननीय काव्य संग्रह बनाता है। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित शांति नायर के कविता संग्रह 'ज्यामिति' आधुनिक हिंदी कविता में सामाजिक जागरूकता, मानवीय संवेदनाएँ और स्त्री-पुरुष संबंधों की यथार्थपरक प्रस्तुति का उत्कृष्ट उदाहरण है। कविताएँ अपने विषय, भाषा और प्रतीकों के माध्यम से पाठक को भीतर तक झकझोरती हैं। प्रमुख कविताएँ जैसे 'जाले', 'ज्यामिति' और 'मुनिवर और इडली' जीवन की असमानताओं, पितृसत्ता और प्रेम-संबंधों के जटिल सच को उद्घाटित करती हैं। यह संकलन केवल कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि सोचने और सवाल करने की प्रेरणा देने वाला काव्य दस्तावेज़ है।

एक कविता

एक और रात दिसम्बर की

राजकुमार कुम्भज

एक और रात दिसम्बर की
है पिछले बरस जैसी ही है बिल्कुल
पृथ्वी पर अन्न-जल की तलाश में
भूख-प्यास की पुकार को पुकारते हुए
भय है कि भयग्रस्तता के मारे हैं सभी
जागते हुए,भागते हुए हाँफते-काँपते
भागती रेलगाड़ी में सवार हैं सभी के सभी
पुल नीचे सूखी नदी ऊपर सुलगता अलाव
सुल्तान की नींद में ख़लल नहीं ज़रा भी
गहन-गहरे सुनहरे सपनों में सोया है वह
खोया है बचपन का जादू मेलों की भीड़ में
पीठ हैं,भेड़ें हैं,ऊन है दूसरों के लिए
बज रही है बाँसुरी भी कि जल रहा है रोम
अभी-अभी सिनेमाघर से निकले हैं लोग
भीतर देखा सभी ने,सभी कुछ गर्म
चर्चा गर्म,गोश्त गर्म,नारे गर्म परदे पर
रम है और राम है और हैं शब्द दो ही
जिन्हें अंग्रेज़ी में लिखकर देखता हूँ मैं
कुछ तो गड़बड़झाला है मोहनदास
सिर्फ़ एक दुकान नहीं है ये महाजन की
बिकती हैं अरावली पर्वतमाला? भी यहीं
मैं उतारना चाहता हूँ छिलके चीज़ों के
फिर भी हैं उम्मीदें कि छूट जाती हैं पीछे
और छूट जाती हैं कई-कई ज़रुरी चीज़ें
रिक्तता में रह जाती हैं रिक्तता संपूर्णतः
फिर व्याकरण और प्याज़ के ही नहीं
उतरता हूँ छिलके ज़रा-ज़रा आग के भी
एक और रात दिसम्बर की.

कविता

पत्थर

नीतीश मिश्र

मौन होने की सजा
सबसे अधिक पत्थर ने भोगी है
कभी पानी ने उसे काटा
तो कभी तुम्हारी छेनी-हथौड़ी ने
लेकिन पत्थरों ने कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा
कभी मूर्ति बनकर
कभी घर की चाकी बनकर
तुम्हारी भूख दूर करते रहे
इस सदी का सबसे ईमानदार प्रहरी
अगर कोई है तो वह है
पत्थर।

गजल

मोहन वर्मा, देवास

जाने वालों को तो,दूर जाना था
अपनी खामियां तो एक बहाना था

अपने पास किसी को क्या मिलता
उनके पास अपना इक ठिकाना था

किस उम्मीद पर हम उनको याद करें
उनका मकसद ही हमें भूल जाना था

अश्कों के समंदर को, कहाँ ले जाते
किसी की याद में तो इन्हें बहाना था

किसी की दुआओं में बने रहें हम,बस
यही खुशी थी अपनी,यही खज़ाना था

कब तलक झूठी उम्मीदों में बने रहें यहाँ
चलते हैं, इक रोज़ तो हमको जाना था....

सोनू सेन्टा क्लॉज बनेगा

लघुकथा

सुरेश सौरभ

पति ने दुरदुराते हुए एकदम टीवी बंद कर दी-'स्अला गोदी मीडिया।'

'क्या हुआ?' अपने काम में लगी पत्नी बोली।

अरे! बिकाऊ मीडिया हो चुका है।

क्या करेंगे आप। मेरा तो टीवी देखने का बिलकुल मन ही नहीं होता।

सही कहा मैं तो कभी-कभी यूँ खोल लेता हूँ।

अरे! हाँ, बाजार जाना है, परसों सोनू के स्कूल में सेंटा क्लॉज़ वाला कोई कंपीटीशन रखा गया है। कई दिन से जिद किए है कि सेंटा वाली ड्रेस चाहिए।

चलो तैयार होता हूँ।

पर।

पर-वर क्या?

अरे! वह लोग, कल पूरे बाजार में नारे लगाते हुए हंगामा कर रहे थे, कह रहे थे,यह तमाशा हमारे धर्म के बिलकुल विपरीत है। कहीं सेंटा क्लॉज की ड्रेस लेने हम गए और वहाँ उन उन्मादी-फसादी लोगों ने हंगामा कर दिया तो?

तभी सोनू स्कूल से आ गया, फौरन वही रट लगा दी, बाजार चलो मम्मी ड्रेस लेनी है सेंटा वाली।

छः साल के सोनू को गोदी में उठाकर लाड़ जताते हुए पापा बोले आज जरूर चलेंगे बेटे।

अब भय मिश्रित हर्ष से पत्नी, पति को एकटक देखने लगी। उसके माथे पर बल आ गया। चेहरे पर विषाद की रेखाएं उभरने लगीं।

अरे! तुम काहे फालतू में चिंता करती हो? मैं इन नफरती चिंटुओं से कतई नहीं डरता?

हो हो हो हा हा हा..ऽ ऽ..सोनू को पिता खुशी से उछलने लगे। बाप बेटे की मस्ती का मंजर, वातावरण को खुशनुमा करने लगा।

पत्नी की आंखों में, बच्चों को हजार-हजार खुशियाँ बांटता, सेंटा क्लॉज़ वाली छवि उभरने लगी।

मन रे, गा

सुरेश उपाध्याय

मन रे, गा
सत्य, अहिंसा, करुणा
प्रेम राग गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
सहिष्णुता, सौहाद्र, सद्भाव
मानव गुण गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
समता, न्याय, शांति
जीवन राग गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
नदी, पेड, पर्वत
प्रकृति गुण गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
ग्राम स्वराज, रोजगार, आत्मनिर्भर
रामराज गा
गा, रे मन गा

व्यंग्य

धर्मपाल महेंद्र जैन
लेखक कनाडा निवासी व्यंग्यकार हैं।

आमरण अनशन करके कौन मरा है!

चमनलाल आज उदास दिखे तो मुझे हैरानी हुई। वरना उनके गाल इतने सूखे रहते थे कि लगता था देश का सारा विकास वहीं जाकर रुक गया था। उन्हें देख कर मेरी सवाल पूछने की हिम्मत इसलिए नहीं होती थी कि कहीं उनकी देशभक्ति छलक न पड़े। आज उनके गालों का रंग कुछ फीका था, तो मैंने बात छेड़ी, कहा, देश चौतरफ़ा विकास कर रहा है। जिसकी देखो उसकी तोंद ट्रिपल इंजिन सरकार जैसी कम से कम तीन दिशाओं में फैल रही है। एक आप हैं कि दुबले होते जा रहे हैं, क्या गड़बड़ है?

वे बोले, हम विपक्ष में हैं। आजकल विपक्ष पराली जैसा हो गया है। जलाओ तो प्रदूषण, न जलाओ तो बदबू। विपक्षी होना किसी अपराध से कम नहीं है। बोलो तो राष्ट्रद्रोह, चुप रहो तो पप्पू और उनके पपीज़ जैसे अनुपयोगी। जितना पैसा लगाया, सब डूब गया। तुम ही कोई नुस्खा बताओ।

मैंने कहा, उपाय तो सरल है। विशाल देश में समस्याओं की कमी नहीं है। कोई भी समस्या उठाइए, चाहे वो राष्ट्रसंघ की हो या पीपल्यापाड़ा की। समझ आती हो या ऊपर से जाती हो। कोई भी एक समस्या उठाइए और आमरण अनशन की घोषणा कर दीजिए।

'तुम्हारा दिमाग अमेरिकन हो गया है क्या, जो ऐसा आत्मघाती विचार दे रहे हो?'

'नहीं तो, मेरा दिमाग़ गमछा हो गया है और चारों तरफ लहरा रहा है। इसीलिए इतना अदद विचार दिया है। आमरण अनशन हमारे लोकतंत्र का सबसे सुरक्षित नाटक है। इसमें मरने का केवल अभिनय होता है। आजकल कोई आमरण अनशन नहीं कर

रहा, आप करेंगे तो छा जाएँगे। टीवी चैनल वाले कैमरे, माइक, एंकर, एक्सपर्ट, सबको लेकर दौड़े चले आएँगे। यह देखने कि इस युग में कौन है जो देश के लिए मर रहा है।

वे घबरा गए, तुम मुझे मरवाना चाहते हो?

मैं हँसा, मरवाना? अरे भाईसाहब, आमरण अनशन से कौन मरता है। यह तो लोकतंत्र में प्रसिद्धि पाने का इंस्टेंट नूडल है। खा-पीकर अनशन पर बैठ जाओ। अब आपके शरीर को भूख नहीं लगेगी, भूख प्रजातंत्र को लगेगी। और, प्रजातंत्र को भूखा देख सैकड़ों छुटभयै लपक पड़ेंगे उसे बचाने। आपके लोग भी गन्ने का रस, ग्लूकोज़, नींबू-पानी पिलाने के लिए अड़े रहेंगे।

वे बोले, लेकिन जनता मुझसे कैसे जुड़ेगी?

मैंने कहा, जनता को बस गांधीजी की फोटो के नीचे दरी पर बैठा एक आदमी चाहिए, ज़मीन से जुड़ा। मुद्दा कोई भी हो-बिजली-पानी, महँगाई, बेरोज़गारी, वोट चोरी, अमेरिकन टैरिफ या घटिया चीनी सामान। जनता को असली नौटंकी करने वाला चाहिए।

वे चिंतित हुए, अगर सच में मेरी हालत बिगड़ गई तो?

मैंने कहा, आपकी हालत बिगड़ने नहीं दी जाएगी। अनशन पर बैठते ही आपका शरीर देश की संपत्ति हो जाएगा। ग्लूकोज़ चढ़ाने वाले से लगा कर आपका बयान प्रसारित करने वाले लोगों की लाइन लग जाएगी। आमरण अनशन करके मरने वालों का कोई आँकड़ा किसी के पास नहीं है।

उनकी आँखों में चमक आ गई। तो क्या माँगें रखूँ?

मैंने कहा, माँग छोटी रखिए। बड़ी माँग रखेंगे तो मुख्यमंत्री लापता हो जाएँगे। माँग ऐसी हो जो शाम की न्यूज बुलेटिन आने के पहले पूरी हो जाए। चार बजते-बजते सरकारी ज़मीर का कार्यालय बंद हो जाता है।

वे बोले, दिन-दहाड़े हो रही चोरियों के खिलाफ बैठ जाऊँ?

मैंने कहा, ना, ना। वे समझेंगे आप वोट चोरी की बात कर रहे हैं। ऐसी चोरी का कोई संज्ञान नहीं लेगा।

वे हताश होकर बोले, तो फिर किस बात पर आमरण अनशन करूँ?

मैंने कहा, जिस बात से ज़िंदा लौट आने की गारंटी हो, वैसा कुछ। जैसे कि जनता के लिए रात-दिन एक करने वाले विधायकों-सासंदों का वेतन-भत्ता बढ़ाने की माँग करो, मुख्यमंत्री के लिए बुलेटप्रूफ कार की मांग करो। विपक्षी लोगों को वाशिंग मशीन में धो कर उनकी पार्टी में रखने की मांग करो।

अंततः वे आमरण अनशन पर बैठ गए। उन्होंने माँग रखी कि विधायक-सांसद निधि चार गुना नहीं की जा सके तो दो गुना अवश्य की जाए ताकि वे लोग अपने क्षेत्र का कुछ विकास कर सकें। सारे सांसद-विधायक उनकी माँग के समर्थन में आ गए हैं। वे ज़मीन पर बैठे हैं और लोकतंत्र उनकी माँग मनवाने में लगा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला साहित्य और टकराहटों का प्रभाववादी दौर

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कला में आधुनिकता कहीं आत्ममुग्धता तो नहीं? यह प्रश्न पूर्व की भांति ही अडिग है पर उससे इतर थोड़ी बात तो की ही जा सकती है। कला जब आधुनिकता की ओर बढ़ रही थी साहित्य के साथ ने उसे मजबूती प्रदान की। आंदोलन हमेशा सहयोग की माँग करता है, सहयोग की भावना यहाँ भी प्रबल थी। आधुनिक चित्रकला को तत्कालीन साहित्य से विलग नहीं माना जा सकता। यहाँ मैं आधुनिक वही कह रहा हूँ जो कला में फिलहाल मान्य है। कलाकार साहित्यकारों से तो साहित्यकार कलाकारों से प्रभावित नज़र आ रहे थे फलतः बदलाव होना ही था और हुआ भी। कलाकारों में स्व के बोध की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही थी। दर्शक के दर्शन और उनके प्रभाव से बेखबर वो अपने स्वतंत्र सृजन पर ध्यान देने में लगे थे। कला धीरे-धीरे सामूहिकता से परे की ओर बढ़ रही थी। कलाकार परिणाम से बेखबर बस काम में लगे रहे। राजा, समाज, समाज के लोग सब के सब अब बौने नजर आने लगे। डर नामक बिमारी को कलाकारों ने जीत लिया था। साहित्य एवं कला की भूमिका समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण है। बिना इसके समाज, समाज नहीं रह जाता या अधूरा ही रहता है। सृजन में पक्ष एवं विपक्ष दोनों होते हैं और मजबूती के साथ खड़े रहते हैं पर हमेशा मजबूत ही हों संशय है। शुरू में कलाएं सत्ता के दबाव में पलीं। पनपीं जरूर पर खुलकर खिल नहीं सकीं। तमाम वादों से भी प्रभावित रहीं। प्रमुख व्यक्तियों के शबीह चित्रों तक सिमट कर रह गई थी कला या फिर फूल-पत्ती, बाग-बगीचों, धर्म के इर्द-गिर्द घूमता रहा कलाकार। समय बीतता गया कलाकार की छटपटाहट ने उसे लगातार झकझोरना जारी रखा। अवस्था असहनीय स्तर तक पहुँच गई। इस बीच समकालीन साहित्य भी प्रभाववाद की बात कर रहा था। मामूली से मामूली विषय, प्रसंग को लेकर साहित्यकार विशेष लेखनशैली से उसको इतना महत्वपूर्ण बना दे रहे थे कि सौंदर्य शब्द-शब्द से झलक उठे। वर्णनात्मक शैली में विशेष लेखन साधारण से साधारण विषय को भी विशेष बना दे रहे थे। साधारणतः दिनचर्या भी लेखनीय जादू के सहारे पाठकों तक अच्छी पैठ बना पाने में सफलता हासिल करने लगी थी। सामान्य भी विशेष बन सकता है के सूत्र के सहारे प्रभाववाद अपने कदम बढ़ा रहा था, शायद यही समय की मांग भी थी, पर आने वाले समय में भी यह मांग जायज मानी जाएगी, संदेहप्रद है। परिवर्तन लगभग रास आने लगी थी, दबी जुबान में ही सही आम पाठकों और दर्शकों के बीच इसकी चर्चा होने लगी थी जबकि अधिकतर आलोचकों का समर्थन उन्हें नहीं मिल रहा था। साहित्यकारों की भांति कलाकारों को भी साधारण से साधारण विषयों, बिखरी पड़ी हुई वस्तुओं, दीन-हीन, निरीह या थके-हारे मनुष्यों को विशेष तरीके से बनानें में आनंद आने लगा। वस्तु चित्रण, जीवन चित्रण सहित लगभग सभी चित्रों में प्रकाश के क्षणिक से क्षणिक पल पर भी काम होने लगा था। प्रकाश के बदलते अवस्था को फलक पर कैद कर लेने की होड़ सी मच गई थी। कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में जाकर विषय के सामने घंटों बैठकर सृजन करता था हालांकि उस पर यथार्थवादी तमगा भी लगाने का प्रयास हुआ पर अंतर स्पष्ट है जो पहले भी था कि यथार्थवादी कृतियों में रंग और रूप में परिवर्तन संभव नहीं था, नपा-तुला संयोजन, सधा हुआ तूलिका संचालन यथार्थवाद की पहचान रही है जबकि यहाँ विषय तो आम होता था पर प्रस्तुति आम नहीं थी। कलाकारों को वस्तु से ज्यादा उसपर तैरता प्रकाश प्रभावित कर रहा था जो वस्तु के रूप से ज्यादा सौंदर्ययुक्त परिवेश को दर्शा रहा था। प्रभाववाद आरोप-प्रत्यारोप के भीषण दौर से गुजरते हुए तपे हुए सोने की भांति अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहा। दुनिया में साधारण कुछ भी नहीं है सब के सब विशेष हैं बस समय और सही कद्रदान सही समय पर मिल जाए। पास को खास नहीं मान सकने वाले पद्धति से बाहर आकर प्रभाववादी कलाकार अपने आस-पास को ही खास नज़र से देखने लगे। टूटी-फूटी, पुरानी बिखरी पड़ी वस्तु भी प्रकाश के प्रभाव से कितनी प्रभावी बन सकती है, प्रभाववादियों ने इसका भरसक भान कराया है। प्रभाववाद में इस पक्ष पर काफी काम हुआ है।

कह सकते हैं कि प्रकाश के विशेष प्रभाव के साथ

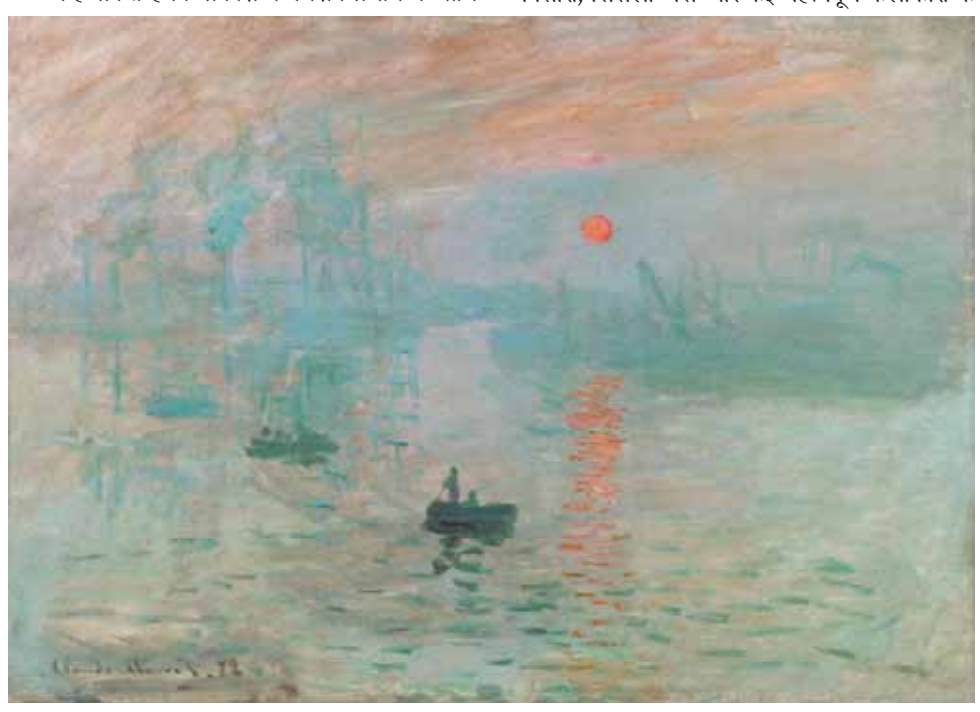

यथार्थवादी कृतियाँ भी प्रभाववादी बन गईं। कहीं-कहीं यथार्थवाद के ही परिवर्तित रुप को प्रभाववाद माना गया है। बात अगर अंतर की हो तो नैसर्गिकता पर नैसर्गिक प्रकाश के प्रभाव के चलते कृतियों को प्रभावी बना देने के साथ ही उसके सौन्दर्य पक्ष को और अधिक प्रबल बना देना ही प्रभाववाद था। वही प्रभाववाद जिसमें कलाकार वैज्ञानिक तरीकों से कृतियों को परिवर्तित करने के प्रयास किए, वही प्रभाववाद जिसके बिना आधुनिक कला को समझ पाना मुश्किल है, जिसका प्रभाव ही रहा कि कलाकार खुल कर अपना आसमान तय करने लगे। वे सभी कलाकार जो आगे चलकर किसी न किसी वाद के जन्मदाता माने गए, खुद को प्रभाववाद से काफी हद तक प्रभावित मानते हैं। प्रभाववाद कई प्रयोगों हेतु जाना जाता है। माने, मोने, पिसारो, सिसली जैसे और कई महत्वपूर्ण कलाकारों के परिश्रम का ही फल प्रभाववाद है। 1863 का समय रहा जब लीक से हटकर काम करने वाले कलाकारों की कृतियाँ प्रदर्शनी हेतु अस्वीकृत कर दी गईं जबकि वे तमाम प्रयोगों और पूर्व के कई विशेष कलाकृतियों के अध्ययन के बल पर आधुनिक कला को मजबूती प्रदान करने हेतु मजबूत बुनियाद बनाने में जुटे हुए थे। कलाकृतियाँ प्रदर्शनी हेतु भेजी तो गईं पर चयन समिति में इस क्रांतिकारी परिवर्तन का कोई असर नहीं पड़ना था, समिति में परंपरागत विचारकों का बोलबाला था, उन्हें तो अपने पूर्व के बनें बनाए ढर्रे पर ही चलना था। परम्परागत मानकों को सम्हालना समिति के लोग खुद का उत्तरदायित्व समझते थे। ऐतिहासिक एवं धार्मिक वो भी बिल्कुल ही सावधानी पूर्वक बनाए गए कृतियों को चुनना उनका लक्ष्य था।

विरोधी विचारों के युद्ध में जीत सत्ताधारियों की हुई। उस वर्ष फ्रेंच राष्ट्रीय कला संस्थान द्वारा लगभग 4000 से भी अधिक चित्रों को अस्वीकृत कर दिया गया। एडवर्ड माने की कृति को दो वस्त्र युक्त पुरुषों के बीच बैठी एक निरावरण महिला के कारण अस्वीकृत होना पड़ा जबकि पूर्व में भी ऐसी कृतियाँ बनती रही थीं और स्वीकृत भी हुईं थी। अमान्य कृतियों को अमान्य कलाकारों ने आपस में ही खूब सराहा। कृतियों पर चर्चा का आयोजन भी किया गया जो प्रभाववाद के ही प्रभाव का प्रतिफल था।

अस्वीकृत कलाकारों में प्रर्दशनी को लेकर रोष साफ दिखने लगा था। जगह-जगह विरोध में प्रदर्शन होने लगे थे। सम्राट नेपोलियन तृतीय जिनकी रूचि भी परंपरागत ही थी, किन्तु विद्रोह जैसे घटनाओं में पारंगत मन में विचार आया कि क्यों न दर्शकों से ही निर्णय करवाया जाय। संवेदनशीलता प्रर्दशित करते हुए उन्होंने अस्वीकृत कृतियों की स्वतंत्र प्रर्दशनी लगाने का आदेश दिया। प्रर्दशनी 'अस्वीकृत चित्रकारों की प्रर्दशनी' नाम से प्रसिद्ध हुई। वर्ष 1863 आधुनिक चित्रकला के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ उससे भी महत्वपूर्ण साबित हुआ नेपोलियन का निर्णय। कुछ चित्रकार अपनी कृतियाँ वापस ले गए जबकि अधिकतर चित्रकारों ने अपने कृतियों को प्रर्दशित करने का निर्णय लिया। कुछ कृतियों को छोड़ अधिकतर उपहास की पात्र बनीं किंतु नियमित दीर्घा की अपेक्षा भीड़ यहाँ ज्यादा रही। आगे चलकर आलोचक लुई के व्यंग्यात्मक लेख में क्लोद मोने के चित्र इंप्रेशन सनराइज हेतु प्रभाववाद शब्द का प्रयोग ही प्रभाववद नाम का कारण बना।

– चित्र साभार गूगल से

इंदल महोत्सव: सांस्कृतिक महापर्व में उमड़ी आस्था

रिपोर्ट

मटली से

डॉ.ब्रह्मदीप अलूने

आदिवासी आस्था,परंपरा और लोकसंस्कृति का भव्य संगम इस वर्ष आदिवासी बाहुल्य बडवानी जिले के मटली में आयोजित तीन दिवसीय इंदल महोत्सव में देखने को मिला। हजारों की संख्या में पहुंचे आदिवासी समुदाय के लोग न केवल इस ऐतिहासिक परंपरा के साक्षी बने, बल्कि उन्होंने अपने सांस्कृतिक नृत्यों, पारंपरिक वेशभूषा और लोकगीतों के माध्यम से अपनी समृद्ध विरासत का शानदार प्रदर्शन भी किया। तीन दिनों तक मटली उत्साह, उमंग, श्रद्धा और लोकनृत्यों की धुनों से सराबोर रहा। ढोल, मांदल,ताशे और पारंपरिक वाद्य जब

गूंजे,तो हर तरफ आनन्द,उल्लास और सांस्कृतिक गौरव की अनुभूति हुई।

इंदल देव की आराधना के साथ प्रारंभ हुए इस महोत्सव में परंपरागत विधि-विधान से पूजा-अर्चना की गई। इसके बाद देश भर से आएं लोकनृत्य प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। महिलाएं पारंपरिक परिधानों में, पुरुष रंग-बिरंगे वेशभूषा और वाद्ययंत्रों के साथ जब मंच पर उतरे तो पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट और लोकधुनों की लय में झूम उठा। यह आयोजन केवल उत्सव नहीं बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने का संकल्प रहा, जिसने नई पीढ़ी को भी अपनी संस्कृति पर गर्व करने का अवसर दिया।

इस वर्ष के इंदल महोत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण रहे,गेड़ी नृत्य,पंडवानी नृत्य, मोनिया नृत्य, मणियारों रास नृत्य,सौंगी मुखौटा नृत्य,निमाड़ी गम्मत,भवई एवं चकरी नृत्य तथा डांडिया रास। राठवा जनजातीय नृत्य,महाकाल नृत्य,हरबोला गायन, मटकी कालबेलिया नृत्य, बधाई नृत्य और गुदुमबाजा गोंड नृत्य। गेड़ी नृत्य ने अपनी रोमांचक प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया,वहीं पंडवानी ने लोककथा,वीरता और सांस्कृतिक गौरव को मंच पर जीवंत कर दिया। सौंगी मुखौटा नृत्य और राठवा जनजातीय नृत्य ने लोकरंगों की विविधता का अद्भुत रूप सामने रखा,जबकि कालबेलिया और डांडिया रास ने उत्साह और उल्लास को चरम पर पहुंचा दिया।

महोत्सव का प्रत्येक क्षण सांस्कृतिक विविधता का परिचायक रहा। मंच पर जहां लोकनृत्य और गायन की श्रृंखला चली,वहीं दर्शक दीर्घा में बैठे ग्रामीण, बुजुर्ग, महिलाएं और युवा बराबर जोश और लगन के साथ जुड़े रहे। महाकाल नृत्य और हरबोला गायन ने आध्यात्मिकता और लोकपरंपरा का अनूठा संगम प्रस्तुत किया। गुदुमबाजा गोंड जनजातीय नृत्य ने जंगलों,प्राकृतिक जीवन और जनजातीय लोकजीवन की झलक प्रस्तुत की।

इंदल महोत्सव आदिवासी समाज के लिए केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि पहचान, आत्मसम्मान और सामाजिक एकता का प्रतीक माना जाता है। यह आयोजन जहां परंपराओं को जीवित रखने का माध्यम बनता है, वहीं युवा पीढ़ी को अपनी लोकसंस्कृति से रूबरू कर आने वाले समय के लिए सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित करने का भी संकल्प दिलाता है। महोत्सव में शामिल बुजुर्गों ने गर्व के साथ बताया कि कैसे वर्षों पुरानी परंपरा आज भी उसी उत्साह और श्रद्धा के साथ निभाई जा रही है।

इंदल महोत्सव का सफल और भव्य आयोजन न केवल मटली क्षेत्र के लिए गौरव का विषय रहा, बल्कि इसने यह संदेश भी दिया कि अपनी परंपराओं को सहेजना ही समाज की वास्तविक समृद्धि है। हजारों आदिवासियों की भागीदारी ने इसे जन-जन का उत्सव बना दिया। अंततः यह कहा जा सकता है कि मटली का इंदल महोत्सव इस वर्ष भी अपनी विशिष्टता, भव्यता और सांस्कृतिक वैभव के साथ स्मरणीय बन गया, जिसे आने वाले वर्षों तक याद किया जाता रहेगा। इंदल उत्सव आदिवासी संस्कृति, आस्था और परंपरा का जीवंत मंच है,जहां जनजातीय कला अपने सम्पूर्ण सौंदर्य और विविधता के साथ प्रकट होती है। यह महोत्सव केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं,बल्कि जनजातीय समुदाय की आत्मा,उनके जीवन दर्शन और सांस्कृतिक गौरव का उत्सव भी है।

इंदल उत्सव के दौरान मंच पर सजी जनजातीय कला प्रकृति,परिश्रम, उत्सवधर्मिता और सामुदायिक एकता की कहानी कहती है। आदिवासी कलाकार जब पारंपरिक वेशभूषा में ढोल, मांदर और गुदुमबाजा की थाप पर नृत्य करते हैं तो उनके हर कदम में इतिहास की स्मृतियाँ, परंपराओं की गूंज और संस्कृति का गौरव झलकता है। मुखौटा नृत्य, कालबेलिया, राठवा और गोंड समुदाय के नृत्य जैसी प्रस्तुतियाँ न केवल मनोरंजन किया बल्कि इनके पीछे छिपी लोककथाओं, देवपूजन, वीरगाथाओं और सामाजिक संदेशों को भी सामने लाने का कार्य किया।

इंदल उत्सव में दिखने वाली कला यह भी सिद्ध करती है कि आदिवासी संस्कृति केवल परंपरा तक सीमित नहीं,बल्कि वह जीवित, गतिशील और रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर है। यह उत्सव कला को सम्मान देता है, कलाकारों को पहचान देता है और समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। इंदल उत्सव जनजातीय कला के उन रंगों का महा-संगम है, जो सांस्कृतिक अस्मिता, गर्व और सामूहिक पहचान को उजागर करते हैं और यह संदेश देते हैं कि अपनी परंपराओं को सहेजना ही किसी समाज की सबसे बड़ी शक्ति है।

माधुरी दीक्षित के अभिनय ने फूँकी इस वेबसिरीज़ में जान

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

मिसेज देशपाण्डे ओटीटी पर रिलीज हो गई । इस क्राइम-थ्रिलर सिरीज़ के कुल छः एपीसोड्स एक साथ रिलीज़ हुए हैं । इस रिलीज़ के साथ ही ग्रे शेड में भी माधुरी छा गई । कहानी को आत्मसात कर माधुरी दीक्षित ने अभिनय में जान झौंक दी और सिरीज़ ऐसी बनी की आपको पलक झपकने का मौका भी नहीं मिलेगा ।

माधुरी दीक्षित को इस बार स्लो बर्नर क्राइम

थ्रिलर सिरीज़ में देखना आपको चौंका सकता है मगर जब आप इस वेबसिरीज़ को देखेंगे तो धक धक करवाने वाली माधुरी दीक्षित आपका दिमाग घुमा देगी । एक सीरियल किलर की भूमिका में माधुरी ने इतनी परफेक्ट अदाकारी की है कि आप प्रशंसा किये बिना नहीं रहेंगे ।माधुरी को अब तक दर्शकों ने रोमाण्टिक, चुलबुली, भोली भाली महिला के रूप में परदे पर देखा है लेकिन इस सिरीज में उनका एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। ग्रे शेड अवतार में माधुरी ने साबित कर दिया है कि उनके अभिनय में काफी रंग हैं। जिस गहराई से उन्होंने अपनी भूमिका को निभाया है, एक भी पल के लिए भी ऐसा नहीं लगता कि हम मिसेज देशपाण्डे को नहीं, बल्कि माधुरी को स्क्रीन पर देख रहे हैं।

इन दिनों ओटीटी की विधा में अडाप्ट करने की होड़ सी मची है, और जियो हॉटस्टार ;इस मामले में काफी आगे है। पहले काजोल के साथ अमेरिकन शो द गुड वाइफ की रीमेक द ट्रायल, फिर रवीना टंडन के साथ अमेरिकन ड्रामा रिवेंज की रीमेक कर्मा कॉलिंग, उसके बाद कोंकणा सेन शर्मा के साथ डैनिश शो द किलिंग की रीमेक सर्च- द नैना मर्डर केस और अब माधुरी दीक्षित के साथ मिसेज देशपांडे, जो 2017 में आई फ्रेंच सीरीज ला मांटे की रीमेक है ।

इस वेबसिरीज़ को नागेश कुकुनूर ने निर्देशित किया है, जिन्होंने इस साल - द हण्ट- द राजीव गाँधी असासिनेशन केस जैसी उमदा सिरीज दी। उनके साथ माधुरी दीक्षित जैसी बेहतरीन अदाकारा की जुगलबन्दी में यह एक विलक्षण वेबसिरीज़ बन सकती थी मगर कुछ अहम् कमियों के चलते दोनों कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाये । एक बढ़िया पटकथा होने के बावजूद, सिरीज़ में रोचक ट्विस्ट और रोमांच की कमी खलती है।

सिरीज़ की कहानी शुरु होती है ऐसे ही मुंबई में एक्टर विराट मल्होत्रा के कत्ल से। पुलिस कमिश्नर अरुण खत्री मौका-ए-वारदात पर पहुंचते हैं। कत्ल करने के तरीके को देखते हुए कमिश्नर की शक की सुई सीधा जाती है हैदराबाद के जेल में कैद सीमा देशपांडे उर्फ मिसेज देशपांडे उर्फ जीनत पर। जीनत पिछले पच्चीस साल से जेल में बन्द मिसेज सीमा देशपाण्डे उर्फ ज़ीनत पर जाता है जिसने इसी क्राईम मोड़ पर पुणें में आठ मर्डर किये थे । ज़ीनत इस मामले में पुलिस की सहायता करना चाहती है। इसके आगे कई मोड़ हैं,कई शक और शुब्हा हैं और अपेक्षित - अनपेक्षित मगर कम आकर्षक या यूँ कहे कि नीरस मोड़ के साथ कहानी चरम की ओर बढ़ती है जो निराश करती है ।

पुलिस कमिश्नर की भूमिका में प्रियांशु चटर्जी इससे पहले भी कई फिल्मों और सिरीज में ऐसी भूमिका निभा चुके हैं अतः यहाँ भी उसका दोहराव हैं । सिद्धार्थ चाँदेकर ,एक गँभीर पुलिसवाले की भूमिका में जो हर हाल में शहर में बुराई फैला रहे अपराधियों को कड़ी सजा दिलवाना चाहता हैऔर वो अपनी पत्नी को भी समय नहीं दे पाता क्योंकि ज्यादातर समय वो अंडरकवर मिशन्स पर ही रहता है काफी जमे हैं । वे इस सिरीज़ के सरप्राइज फैक्टर हैं। उनके अलावा दीक्षा जुनेजा और निमिशा नायर ने भी अपने-अपने भूमिका के प्रति पूरा न्याय किया है ।

वेबसिरीज़ का निर्देशन नागेश कुकुनूर ने किया है जो काफी हद तक पुरअसर है । रोहित जी. बनवलीकर की कहानी भी अच्छी है ? मगर पटकथा कमज़ोर है । कुल मिलाकर, यह वेबसिरीज़ सिर्फ माधुरी दीक्षित के प्रशंसकों के लिए है, लेकिन एक बढ़िया रोमांचक क्राइम थ्रिलर की उम्मीद रखने वालों को यह निराश करती है।

मुद्दा

सत्य प्रकाश नायक
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

एआई का इंडिया: चमकती स्क्रीनें, छूटती ज़िंदगियाँ

एआई आज सिर्फ़ एक तकनीक नहीं रहा। वह हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस तरह घुल चुका है कि अक्सर हमें एहसास भी नहीं होता कि हमारे कितने फैसले अब एल्गोरिदम की सलाह से प्रभावित हो रहे हैं। सुबह का अलार्म कब बजे, रास्ते में कौन-सा गाना बजे, मोबाइल खोलते ही कौन-सा वीडियो हमें रोक ले–यह सब किसी न किसी रूप में एआई दिशा देने लगा है। दफ़्तरों में रिपोर्ट लिखने से लेकर रिज़्यूमे छाँटने तक, और शिक्षा में यह तय करने से लेकर कि किस विद्यार्थी को कौन-सा कंटेंट 'उपयुक्त' माना जाए–एआई अब सोचने की प्रक्रिया के बीच आ चुका है।

लेकिन इसी तेज़ रफ़्तार के बीच एक असहज सवाल उभरता है– क्या भारत का हर नागरिक इस एआई-दुनिया में बराबरी से शामिल है? या फिर हम एक ऐसे देश की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ तकनीक कुछ हाथों में शक्ति बन रही है, और बहुत-से लोग केवल उसके परिणाम झेलने वाले दर्शक बनते जा रहे हैं?

आज का भारत एक गहरा विरोधाभास उजागर करता है। एक तरफ़ शहरों में लोग कुछ सेकंड में एआई से प्रेज़ेंटेशन, रिपोर्ट और कोड तैयार कर रहे हैं। दूसरी तरफ़ ग्रामीण इलाक़ों में लोग अब भी स्थिर इंटरनेट सिग्नल पाने के लिए जगह बदल-बदलकर कोशिश कर रहे हैं।

इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएएमए) और कांतार की इंडिया इंटरनेट रिपोर्ट 2024 बताती है कि जहाँ शहरी भारत में इंटरनेट पहुँच लगभग 72 प्रतिशत तक है, वहीं ग्रामीण भारत में यह 38-40 प्रतिशत के बीच सिमटी हुई है। यह आँकड़ा केवल कनेक्टिविटी की कमी नहीं दर्शाता, बल्कि यह संकेत करता है कि देश की एक बड़ी आबादी डिजिटल भविष्य की तैयारी से ही बाहर रह जा रही है।

जब सरकारें, संस्थान और बाज़ार शिक्षा, रोज़गार, स्वास्थ्य और कल्याण सेवाओं में एआई को तेज़ी से शामिल कर रहे हैं, तब यह डिजिटल अंतर केवल सुविधा का सवाल नहीं रहता। यह धीरे-धीरे अवसर, क्षमता और निर्णय लेने की शक्ति के अंतर में बदलने लगता है।

पहुँच से आगे की असमानता डिजिटल पहुँच को केवल ÷नेटवर्क है या नहीं÷ के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। कई परिवारों में डिजिटल उपकरण और इंटरनेट साझा होते हैं। डेटा की लागत, उपकरण की गुणवत्ता, डिजिटल साक्षरता, भाषा की समझ और साइबर सुरक्षा का ज्ञान–ये सभी मिलकर यह तय करते हैं कि कोई व्यक्ति एआई जैसी तकनीकों से कितना और कैसे जुड़ पाएगा।

इसका अर्थ यह है कि एआई का लाभ केवल इंटरनेट होने से नहीं, बल्कि उसे समझने और नियंत्रित ढंग से उपयोग करने की वास्तविक क्षमता से तय होता है। जहाँ यह क्षमता सीमित है, वहाँ एआई सुविधा से अधिक दबाव और निर्भरता भी पैदा कर सकता है।

डेटा से सीखता एआई – समाज से आता पक्षपात एआई की एक गहरी और अक्सर अनदेखी समस्या यह है कि वह वही सीखता है जो समाज पहले से करता आया है। यदि समाज में किसी समूह के प्रति असमानता या पक्षपात मौजूद है, तो वही पैटर्न डेटा के ज़रिए एआई प्रणालियों में भी पहुँच जाते हैं।

कुछ अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में यह सामने आया है कि चेहरे पहचानने वाली तकनीकों में कुछ वर्गों के लिए सटीकता अधिक रही, जबकि अन्य के लिए गलतियाँ कहीं ज़्यादा पाई गईं। इससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक अपने-आप निष्पक्ष नहीं होती–वह उसी सामाजिक संरचना की छाया होती है जिसमें उसे प्रशिक्षित किया गया है।

भारत जैसे विविध समाज में यह चुनौती और जटिल हो जाती है। यहाँ जाति, भाषा, क्षेत्र, पेशा और सामाजिक हैसियत डिजिटल दुनिया में समान रूप से दर्ज नहीं होतीं। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूर, प्रवासी समुदाय और हाशिये पर खड़े समूह अक्सर डेटा में अदृश्य रह जाते हैं। नतीजतन, एआई आधारित प्रणालियाँ उनके जीवन और ज़रूरतों को समझने में कम सक्षम होती हैं।

निगरानी बनाम सेवा एआई को अक्सर सेवा और सुविधा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यह सवाल भी उतना ही ज़रूरी है कि वह किस हद तक निगरानी का औज़ार बनता जा रहा है। कल्याण योजनाओं, पहचान प्रणालियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में एआई का इस्तेमाल कई बार उन समुदायों पर अधिक सख़्ती से लागू होता है, जिनके पास सवाल पूछने या अपील करने की ताक़त कम होती है। इस असमान शक्ति-संबंध को नज़रअंदाज़ करना तकनीक की सामाजिक भूमिका को अधूरा समझना होगा।

मॉर्फ और डीपफेक- तकनीक का चिंताजनक चेहरा इसी संदर्भ में ÷मॉर्फ÷ और ÷डीपफेक÷ जैसे शब्द केवल तकनीकी शब्द नहीं रह जाते, बल्कि सामाजिक चिंता बन

जाते हैं। मॉर्फिंग में तस्वीरों को इस तरह बदला जाता है कि उनका अर्थ ही बदल जाए, जबकि डीपफेक एआई की मदद से नकली वीडियो या आवाज़ तैयार करता है।

भारत जैसे समाज में, जहाँ व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और पारिवारिक सम्मान गहराई से जुड़े होते हैं, ऐसी डिजिटल छेड़छाड़ के प्रभाव केवल ऑनलाइन नहीं रहते। वे मानसिक, सामाजिक और कानूनी संकट का रूप ले सकते हैं। एआई ने इस चुनौती को इसलिए और गंभीर बना दिया है क्योंकि अब नकली और असली के बीच अंतर करना आम लोगों के लिए आसान नहीं रहा।

शिक्षा- अवसर भी, जोखिम भी शिक्षा के क्षेत्र में एआई दो अलग-अलग परिदृश्य प्रस्तुत करता है। एक ओर, संसाधन-संपन्न क्षेत्रों में विद्यार्थी एआई टूल्स से सीखने, शोध करने और नए कौशल विकसित करने के अवसर पा रहे हैं। दूसरी ओर, सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों में यह तकनीकी अंतर और स्पष्ट होता जा रहा है।

यह अंतर केवल वर्तमान सीख तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आगे चलकर करियर और रोज़गार के अवसरों को भी प्रभावित करता है। इसके अलावा, यदि शिक्षण प्रक्रियाएँ अत्यधिक एआई पर निर्भर हो जाएँ, तो सीखने की गति, शैली और व्यक्तिगत संघर्ष की अहमियत कम हो सकती है–विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें अवधारणाएँ समझने में अधिक समय या अलग तरीकों की आवश्यकता होती है।

एआई और मस्तिष्क- न्यूरोप्लास्टिसिटी का सवाल इस बहस का एक और महत्वपूर्ण पहलू है–मानव मस्तिष्क और उसकी न्यूरोप्लास्टिसिटी। न्यूरोप्लास्टिसिटी वह क्षमता है जिसके ज़रिए मस्तिष्क सोच, अभ्यास और मानसिक चुनौती से नए तंत्रिका संबंध बनाता है।

हाल के अध्ययनों में संकेत मिले हैं कि यदि चैट जीपीटी जैसे एआई टूल्स पर अत्यधिक निर्भरता हो जाए, तो सोचने, लिखने और समस्या सुलझाने के दौरान मस्तिष्क का सक्रिय प्रयास घट सकता है। कुछ शोध यह भी बताते हैं कि एआई की मदद से तैयार किया गया कंटेंट व्यक्ति लंबे समय तक याद नहीं रख पाता, क्योंकि आंतरिक संज्ञानात्मक प्रक्रिया सीमित हो जाती है।

यह चिंता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सीखना केवल सही उत्तर पाने का नाम नहीं, बल्कि प्रश्न करने, गलती करने, धैर्य रखने और आत्म-चिंतन से आगे बढ़ने की प्रक्रिया है। समस्या एआई के उपयोग में नहीं, बल्कि उस स्थिति में है जहाँ एआई सोचने की जगह लेने लगे।

रोज़गार, निर्णय और जवाबदेही रोज़गार के क्षेत्र में एआई नई संभावनाओं के साथ नई चुनौतियाँ भी लेकर आया है। कुछ देशों के प्रारंभिक अनुभव बताते हैं कि भर्ती में उपयोग होने वाले एआई सिस्टम पुराने डेटा के आधार पर निर्णय लेते हैं, जिससे पहले से मौजूद असमानताएँ दोहराई जा सकती हैं।

यहाँ एक बुनियादी सवाल उभरता है–अगर एआई आधारित निर्णय किसी व्यक्ति को नुकसान पहुँचाए, तो जवाबदेह कौन होगा? कंपनी, तकनीक विकसित करने वाला, या वह संस्था जो उसका उपयोग कर रही है? बिना स्पष्ट जवाबदेही के एआई का विस्तार सामाजिक विश्वास को कमजोर कर सकता है।

आगे का रास्ता- समावेशन, अधिकार और एजेंसी एआई पर होने वाली अधिकांश चर्चाओं में एक सवाल अक्सर छूट जाता है–इस तकनीक को डिज़ाइन कौन कर रहा है, और किन अनुभवों के आधार पर आज एआई प्रणालियों को विकसित करने वाली टीमों, डेटा सेट्स और निर्णय ढाँचों में महिलाओं, भाषायी अल्पसंख्यकों और हाशिये के समुदायों की भागीदारी सीमित है। इसका असर केवल प्रतिनिधित्व का नहीं, बल्कि परिणामों का भी है। जब किसी समूह के अनुभव डेटा में पर्याप्त रूप से दर्ज ही नहीं होते, तो एआई आधारित नीतियाँ और सेवाएँ अनजाने में उसी असमानता को दोहराती हैं जिसे वे दूर करने का दावा करती हैं।

इसी के साथ एआई के युग में नागरिक अधिकारों का प्रश्न भी नए सिरे से उभरता है। जब किसी व्यक्ति का मूल्यांकन, पात्रता या प्रोफ़ाइल किसी एल्गोरिदम के ज़रिए तय होने लगे, तो यह जानना ज़रूरी हो जाता है कि उस निर्णय का आधार क्या है, और गलती की स्थिति में जवाबदेह कौन होगा। डेटा की सहमति, निर्णय की व्याख्या का अधिकार और शिकायत निवारण–ये सब एआई शासन के अनिवार्य हिस्से होने चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो तकनीक सुविधा देने के बजाय सत्ता का ऐसा ढाँचा बन सकती है, जहाँ नागरिक उपयोगकर्ता बनकर रह जाएँ।

हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हर व्यक्ति के पास तुरंत उन्नत उपकरण या सस्ता डेटा उपलब्ध हो जाएगा। लेकिन हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि एआई की समझ, उससे जुड़ी सावधानियाँ और सबसे महत्वपूर्ण–स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की मानवीय क्षमता–सबके लिए समान रूप से सुलभ हों।

क्योंकि असली सवाल यह नहीं है कि एआई कितना तेज़ हो गया है, बल्कि यह है कि इस तेज़ी के बीच इंसान अपनी एजेंसी, विवेक और ज़िम्मेदारी को कितना बचा पा रहा है। तभी एआई वास्तव में प्रगति का साधन बनेगा, न कि एक नई असमानता की रेखा।

वाहन चालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

बैतूल। बैतूल स्थित ऑडिटोरियम में वाहन चालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन ने वाहन चालकों को शहर, जिले में सुगम यातायात संचालन, अनुशासित वाहन संचालन, वैधानिक दस्तावेज सहित वाहन के रखरखाव की जानकारी दी। बीमा संबंधी एडवाइजरी जारी करते हुए जिले में सडक़ दुर्घटनाओं में कमी लाने, ब्लैकस्पॉट/एक्सीडेंट जोन एरिया के आसपास के ग्रामीणों को आपातस्थिति में सडक़ दुर्घटना के घायलों को सीपीआर देने एवं घायलों को गोल्डन ऑवर में ट्रामा/हॉस्पीटल पहुँचाने की

महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। पुलिस अधीक्षक ने वाहन चालकों को रहवीर योजना, हिट एंड रन स्कीम, कैशलेस ट्रेटमेंट स्कीम के बारे में भी बताया। शिविर के दौरान नागरिकों को बताया कि दो पहिया वाहन चलाते समय चालक एवं पीछे बैठे व्यक्ति दोनों के लिए हेलमेट पहनना अनिवार्य है। चार पहिया वाहन में यात्रा करते समय सभी व्यक्तियों को सीट बेल्ट लगाना आवश्यक है। नाबालिग व्यक्तियों से वाहन न चलाएँ और न ही उन्हें वाहन चलाने दें। शराब पीकर वाहन न चलाएँ, यह दुर्घटना का मुख्य कारण बनता है। गलत दिशा में वाहन न चलाएँ। नेशनल हाईवे पर मेडियन में अवैध कट बनाकर वाहन न निकालें, यह अत्यंत जोखिमपूर्ण है। ट्रैक्टर-ट्रॉली एवं मालवाहक वाहनों में यात्री परिवहन न करें। वाहन को निर्धारित गति सीमा में ही चलाएँ। किसी भी यात्री या मालवाहक वाहन में ओवरलोडिंग न करें। सडक़ किनारे लगे यातायात संकेतों एवं चिन्हों का अनिवार्य रूप से पालन करें। इस अवसर पर नागरिकों को सुरक्षित एवं जिम्मेदार यातायात व्यवहार अपनाने की शपथ भी दिलाई गई।

अभिमन्यु श्रीवास्तव को पितृ शोक, अंत्येष्टि आज

बैतूल। समाजसेवी और एमपी विनियर्स के महाप्रबंधक अभिमन्यु श्रीवास्तव के पिताजी बीएन श्रीवास्तव (लाल साहब) का 90 वर्ष की आयु में आज 27 दिसंबर की दोपहर में देवलोक गमन हो गया है। स्व. श्री श्रीवास्तव वेस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड पाथाखेड़ा से वर्ष 1999 में सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने अपनी सेवा की शुरुआत वर्ष 1964 में वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड से की थी। उनका अंतिम संस्कार रविवार 28 दिसंबर को दोपहर 12 बजे कोठीबाजार मोक्षधाम बैतूल में किया जाएगा। वे अपने पीछे दो पुत्र अरविंद और अभिमन्यु सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए। उनके निधन पर समाजसेवियों, कारोबारियों, जनप्रतिनिधियों और शुभचिंतकों ने शोक व्यक्त कर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने की ईश्वर से कामना की है।

पुलिया से नीचे गिरी बाइक, भाई-बहन घायल

बैतूल। बरेठा घाट के पास शनिवार दोपहर एक दर्दनाक सडक़ हादसा हो गया। अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे गिर गई। हादसे में बाइक सवार भाई-बहन गंभीर रूप से घायल हो गए। युवक के पैर में लोहे की रॉड आर-पार धंस गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार घटना दोपहर करीब 2 बजे की है। ग्राम

कोटमी माल निवासी 29 वर्षीय धर्मेंद्र उइके अपनी बहन पूनम उइके के साथ बाइक से पाढर बाजार की ओर जा रहे थे। वे बाजार में दुकान लगाने के लिए निकले थे, इसी दौरान बरेठा घाट के पास पीछे से आए एक अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को कट मार दी। टक्कर लगते ही बाइक असंतुलित होकर पुलिया से नीचे जा गिरी। हादसा होते ही मौके पर मौजूद राहगीरों ने डायल 112 को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल पहुंचाया गया। जिला अस्पताल में प्राथमिक जांच के दौरान डॉक्टरों ने पाया कि धर्मेंद्र के पैर में लोहे की रॉड आर-पार फंसी हुई है। डॉक्टरों के अनुसार यह गंभीर चोट है, जिसे निकालने के लिए विशेष उपचार की आवश्यकता है।

दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी के दरबार में गुरुभक्तों का ऐसा समागम मानो आस्था का समंदर हिलौरे ले रहा हो...

भव्य और दिव्य स्वरूप में मना गुरु सप्तमी पर्व , दमक उठा श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

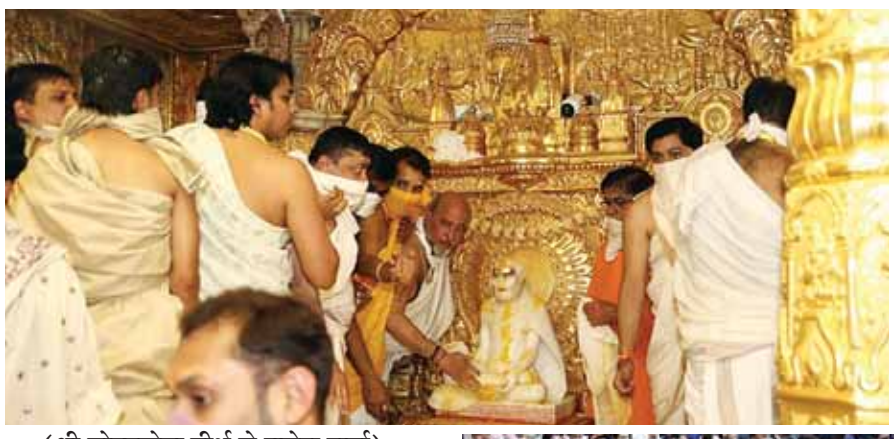

(श्री मोहनखेड़ा तीर्थ से राजेश शर्मा)

देश और दुनिया से हजारों - हजार गुरु भक्तों का सैलाब अपने गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन- वंदन कर अपने को धन्य मान रहा था। जय जय गुरुदेव- दादा गुरुदेव ,जय राजेंद्र के जय घोष की गूंज से गुंजायमान हो उठा था गगन।

गुरुभक्तों की आस्था का यह दिव्य और अनूठा संगम बरसों - बरस याद रहेगा । दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी के दरबार में गुरुभक्तों का ऐसा समागम मानों आस्था का समंदर हिलौरे ले रहा हो। देश- प्रदेश में ही नही अपितु दुनियाभर में विख्यात दादा गुरुदेव के दरबार में 27 दिसम्बर को ऐसा सैलाब उमड़ा कि इस अलौकिक- अनूठे दृश्य को निहारने मानों पुरा मोहनखेड़ा , राजगढ़ और अंचल के गुरुभक्त सड़कों पर थे। श्रीमद विजय राजेंद्र सुरीश्वर जी म.सा. जन्म एवं स्वर्गरोहण दिवस गुरु सप्तमी पर्व भव्य और दिव्य स्वरूप में मना , मानों दमक उठा श्री मोहनखेड़ा तीर्थ और यह पावन धरा।

गुरुदेव के दरबार में आस्था का समंदर , गुरुभक्तों माता- बहनों का अलौकिक- अप्रतिम - अचंभित करने वाला सैलाब - आस्था का यह अनूठा संगम बरसों - बरस याद रहने वाली स्मृतियों में बस गया है। आखिर उत्सव और उल्लास ही तो भारत और भारतीयों की पहचान है और इस में रंग भरते है आस्था के ये अनूठे समंदर.....

लाखों गुरुभक्तों ने गुरुदेव के किए दर्शन वंदन, अल सुबह से देर शाम तक चलता रहा पूजा- अर्चना का दौर

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की पुण्य भूमि पर श्रीमद विजय राजेंद्र सुरीश्वर जी म.सा. जन्म एवं स्वर्गरोहण दिवस पर सुबह से ही दादा गुरुदेव की पूजा-अर्चना का क्रम आरंभ हुआ जो देर शाम तक चलता रहा। सुबह वासक्षेप पूजा के पश्चात मंत्रोच्चार के साथ गुरुदेव का अभिषेक जल और दूध से किया हुआ। उसके पश्चात केशर पूजन का क्रम चलता रहा।

गुरुदेव राजेंद्र सुरीश्वर जी तप और तपस्या से ही विश्व पूज्यनीय हुए - देश और दुनिया भर से आए लाखों श्रद्धालुओ ने गुरु देव के समाधि स्थल पर दर्शन वंदन कर जीवन को निहाल किया। महोत्सव की शुरुआत गुरु गुणावाद सभा के साथ हुई। इस अवसर पर आचार्य श्री हितेशचंद्र सुरीश्वर जी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि यह गुरुदेव की पुण्य भूमि है। यहां की माटी के कण कण में ऊर्जा का वास हैं। उन्होंने उपस्थित गुरुभक्तों से कहा कि वर्ष 2027 में द्वीशताब्दी महोत्सव मनाया जाएगा। जिसकी तैयारियां आरंभ हो गई हैं। मंच से उन्होंने कहा कि त्रिस्तुतिक संघ के सभी आचार्य, मुनि व श्रमणि मंडल द्वी शताब्दी महोत्सव में अपनी सहभागिता प्रदान करेंगे। जिससे यह महोत्सव विशाल पैमाने पर आयोजित होगा। इस अवसर पर मुनि पुष्पेंद्र विजय जी म.सा. ने विचार रखते हुए कहा कि हम सभी भाग्यशाली हैं कि इस पुण्य भूमि की ऊर्जा को प्राप्त कर रहे हैं। गुरुदेव की तप और तपस्या से ही वे विश्व पूज्यनीय हुए है।

खास- खास ..

- 9 केंद्रीय महिला बाल विकास राज्यमंत्री व क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर, क्षेत्रीय विधायक प्रताप ग्रेवाल ने गुरुदेव के दर्शन- वंदन किए ।
- अंतरिक्ष मिशन तथा चंद्रयान 2 मंगलयान व आदित्य के उपकरण बनाने वाले वैज्ञानिक राजमल जैन का बहुमान श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेतांबर ट्रस्ट द्वारा किया गया।
- लाखों गुरुभक्तों ने ग्रहण की प्रसादी

आचार्य श्री हितेशचंद्र सुरीश्वर जी म.सा का मोहनखेड़ा में होगा चातुर्मास

गुरु सप्तमी महोत्सव के दौरान गच्छाधिपति आचार्य श्री हितेशचंद्र सुरीश्वर जी म.सा. के चातुर्मास की घोषणा विध्याचन्द्र सूरी पांडाल में अनेक श्री संघो की उपस्थिति में हुई। देशभर से आए श्री संघो ने आचार्य श्री के चातुर्मास के लिए विनती की जिस पर उन्होंने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आगामी 2026 का चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की। घोषणा के बाद से ही पूरा पांडाल गुरुदेव के जयकारों से गूंज उठा।

// नाम परिवर्तन //

मैं सुरेश शर्मा निवासी एफ-120/12, शिवाजी नगर, भोपाल। यह कि मेरे पासपोर्ट में मेरा नाम सुरेश चंद अंकित हो गया है। जबकि मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम सुरेश शर्मा है। मेरे सभी शासकीय व अशासकीय दस्तावेजों में मेरा नाम सुरेश शर्मा ही दर्ज है तथा मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाता है। आगे भी मेरा सभी शासकीय व अशासकीय दस्तावेजों में सुरेश शर्मा नाम ही अंकित किया जाए व मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए।

शपथग्रहिता
सुरेश शर्मा

शरमन भी चाहते हैं '3 इडियट्स' का सीक्वल बने

'3 इडियट्स' के राजू रस्तोगी यानी शरमन जोशी आज भी इस फिल्म के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सके। फिल्म की रिलीज को 16 साल हो गए, पर वे चाहते हैं कि इसका सीक्वल बनना चाहिए। वे '3 इडियट्स' को अपने करियर की सबसे खास फिल्म मानते हैं। वे खुद को खुशनसीब मानते हैं कि उन्हें इसका हिस्सा बनने का मौका मिला। उन्हें फिल्म से जुड़े कई किस्से भी याद हैं।

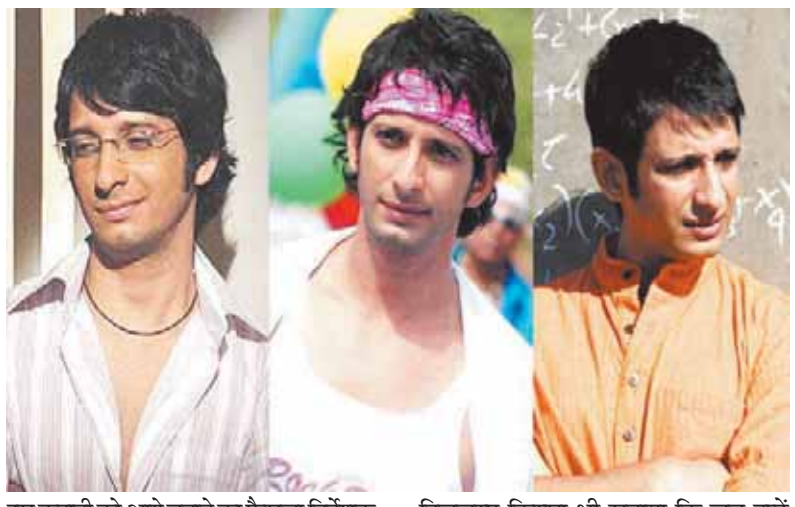

3 इडियट्स' के 16 साल पूरे होने पर फिल्म के सीक्वल की चर्चाएं तेज हैं। इस बीच शरमन जोशी ने '3 इडियट्स-2' पर अपनी चुप्पी तोड़ी और फिल्म से जुड़े यादगार किस्से साझा किए। इसने दर्शकों के दिलों को एक बार फिर छू लिया। राजकुमार हिरानी के निर्देशन में बनी इस सुपरहिट फिल्म को 25 दिसंबर को पूरे 16 साल हो गए। क्रिसमस के दिन रिलीज हुई इस फिल्म ने न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर इतिहास रचा, बल्कि लोगों की सोच, पढ़ाई और जिंदगी को देखने का नजरिया भी बदल दिया। इस बीच आमिर खान, आर. माधवन, शर्मन जोशी और करीना कपूर खान स्टारर इस फिल्म के सीक्वल को लेकर एक बार फिर चर्चाएं तेज होने लगी। हालांकि, अब राजू रस्तोगी का किरदार निभाने वाले एक्टर शर्मन जोशी ने इस पर खुलकर बात की।

शरमन जोशी ने बताया कि वे खुद भी चाहते हैं कि '3 इडियट्स' का अगला पार्ट बने। लेकिन, फिलहाल उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई। सीक्वल की खबरें पहले भी कई बार सामने आई, लेकिन हर बार कुछ और ही निकला। एक बार तो एक विज्ञापन को लोग फिल्म का सीक्वल समझ रहे थे। लेकिन, इस कहानी को आगे बढ़ाने का फैसला निर्देशक राजकुमार हिरानी, लेखक अभिजीत जोशी और आमिर खान ही कर सकते है। फिल्म के 16 साल पूरे होने पर शरमन ने भावुक होकर कहा कि '3 इडियट्स' उनके करियर की सबसे खास फिल्मों में से एक है। वे खुद को खुशनसीब मानते हैं कि उन्हें इसका हिस्सा बनने का मौका मिला।

इसके अलावा उन्होंने हंसते हुए एक दिलचस्प किस्सा भी सुनाया कि जब उन्हें फिल्म के लिए फाइनल कॉल आया, तब वह जिम में सिक्स पैक बनाने में लगे थे। तभी राजकुमार हिरानी ने उनसे कहा था कि अब अगले तीन साल तक जिम की शक्ल मत देखना। यह सुनकर शरमन आज भी मुस्कुरा देते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राजकुमार हिरानी ने उन्हें फिल्म स्टाइल (2001) में देखा था और तय कर लिया था कि भविष्य में किसी फिल्म में उन्हें जरूर कास्ट करेंगे। बाद में वही मौका '3 इडियट्स' के रूप में सामने आया।

फिल्म में जब शरमन का किरदार आत्महत्या की कोशिश करता है, इस सीन को लेकर शरमन ने बताया कि शुरुआत में सिर्फ उनके एक्सप्रेशन से बात नहीं बन पा रही थी। तब हिरानी सर ने इसमें परिवार के शॉट्स और दीये के गिरने वाला सीन एड किया, जिससे इसका असर कई गुना बढ़ गया। शरमन ने बताया कि कई लोग उनके माता-पिता को फोन करके पूछते थे कि वह ठीक तो हैं! इतना ही नहीं, प्रीमियर के समय उनकी छोटी बेटी भी उस सीन को देखकर रो पड़ी थी, तब तक शांत नहीं हुई, जब तक शरमन ने उसे गोद में नहीं ले लिया।

अजय देवगन की फिल्म में नहीं दिखेंगे 'धुरंधर'

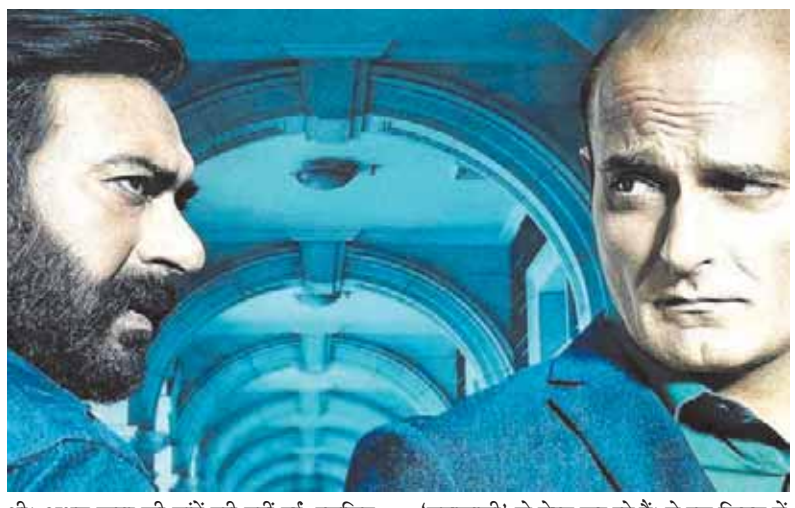

दृश्यम 3' के मेकर्स ने घोषणा की कि उनकी फिल्म 2 अक्टूबर, 2026 को रिलीज होगी। इसके लीड एक्टर्स अजय देवगन, तब्बू, श्रिया सरन और रजत कपूर के नाम भी इसमें शामिल थे। अक्षय खन्ना का नाम गायब था, जिससे लोगों की भौंहें तन गईं। 'धुरंधर' के बाद अक्षय खन्ना काफी सफल रहे हैं, इसलिए फैंस उन्हें 'दृश्यम' के अगले पार्ट में देखने के लिए एक्साइटेड थे, खासकर तब जब उन्होंने 'दृश्यम 2' (2022) में शानदार परफॉर्म किया था। इसी बीच, खबरें आईं कि उन्होंने फीस को लेकर मतभेद के कारण तीसरे पार्ट से किनारा कर लिया है।

उन्होंने अक्षय को समझाने की कोशिश की कि इतनी बड़ी रकम देने से फिल्म का बजट बढ़ जाएगा। लेकिन, अक्षय खन्ना को लगा कि उनकी मांग जायज है। उन्हें पता था कि अब अक्षय की मौजूदगी से फिल्म के प्रति दर्शकों का उत्साह काफी बढ़ जाता है। इसी बीच, यह भी बताया गया कि अक्षय खन्ना और फिल्ममेकर्स के बीच कुछ और मुद्दों पर भी मतभेद थे। उनमें से एक यह था कि अक्षय ने विग पहनने का सुझाव दिया था। फिल्ममेकर्स को यह बात पसंद नहीं आई, शायद इसलिए क्योंकि दूसरे पार्ट में उन्होंने विग नहीं पहनी थी। अक्षय खन्ना की मांगें पूरी नहीं हुईं, इसलिए उन्होंने 'दृश्यम 3' से बाहर निकलने का फैसला किया। बेशक, उन्होंने फिल्ममेकर्स को शुभकामनाएं दीं। यह अलगाव अच्छे ढंग से हुआ और फिल्म निर्माता भविष्य में अक्षय के साथ काम करने की उम्मीद करते हैं जब दोनों के विचार एक जैसे होंगे। अक्षय खन्ना अपनी तेलुगू फिल्म 'महाकाली' से डेब्यू कर रहे हैं। वे इस फिल्म में असुरगुरु शुक्राचार्य का किरदार निभाएंगे। इस फिल्म की कहानी 'हनुमान' के लिए मशहूर प्रशांत वर्मा ने लिखी है और इसका निर्देशन पूजा अपर्णा कोल्लुरु ने किया है। 'महाकाली' एक सुपरहीरो फिल्म है जिसमें भूमि शेट्टी देवी काली का किरदार निभाएंगी।

रियल बॉक्स

'धुरंधर' के धमाके से निकला अनोखा अक्षय

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी अभिनेता के हाथ अचानक कोई ऐसी भूमिका आती है, जो उसके पूरे करियर को नए सिरे से परिभाषित कर देती है। स्पाई-एक्शन थ्रिलर 'धुरंधर' में अक्षय खन्ना के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। आदित्य धर के निर्देशन में बनी यह फिल्म न केवल बॉक्स ऑफिस पर तूफान लाई, बल्कि इसने ऐसी मिसाल बनाई जो साबित करती है, कि सही वक्त पर, सही किरदार, सही अभिनेता के हाथों में पहुंच जाए तो फिल्म का भाग्य बदल जाता है। रणवीर सिंह के फिल्म का हीरो होते हुए अक्षय खन्ना का रहमान डकैत का नकारात्मक किरदार पूरी फिल्म पर हावी है। यह ऐसी घटना है, जो बॉलीवुड के विलेन-केंद्रित अभिनय के एक नए युग की शुरुआत लगती है। फिल्म में अक्षय खन्ना की रहमान डकैत की भूमिका को कालजयी कहने का कारण यह है, कि यह ऐसा किरदार है जो समय की परतों को भेदकर दर्शकों के मन में जगह बनाता है। बॉलीवुड में अभी तक के यादगार विलेन के किरदारों को देखें तो सभी में एक विशेष गुण है कि वे मनोविज्ञान और आचरण से एक आभामंडल रचते हैं। अक्षय खन्ना का रहमान डकैत का किरदार भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है। लेकिन, अपने समकालीन तरीके से।

यह किरदार केवल अपराधी नहीं, ऐसा चरित्र है जिसमें चमक है, आकर्षण है और अंधकार भी। जो हर पल सतह के करीब रहता है। अक्षय ने इन सभी परतों को इतनी निपुणता से निभाया कि दर्शक रहमान को समझ तो सकते हैं, लेकिन उसे माफ नहीं कर सकते। यह एक जटिल भूमिका थी और अक्षय ने उसे तन्मयता से निभाया। 'धुरंधर' की सफलता और अक्षय खन्ना की नकारात्मक भूमिका का सराहा जाना, यह सब मिलकर संदेश देते हैं कि सिनेमा केवल लीड रोल तक सीमित नहीं है। असल कलाकार किसी भी भूमिका से अपनी पहचान बना सकता है। 'धुरंधर' का यह धमाका दिखाता है, कि फिल्म इंडस्ट्री में सफलता केवल बड़े नामों से नहीं, बल्कि सही किरदार, सही निर्देशन और सही अभिनेता के संयोग से मिलती है। अक्षय खन्ना, जो दो दशकों तक एक प्रतिभाशाली लेकिन अपरिचित अभिनेता रहे, वे अब नकारात्मक किरदार के नए आइकन बन गए। उनकी यह अभिनय यात्रा न केवल व्यक्तिगत सफलता है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक संदेश भी देती है कि सफलता की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। कोई अभिनेता कभी भी, किसी भी भूमिका में अपनी पहचान बना सकता है।

अक्षय खन्ना 28 साल की मेहनत के बाद एक ऐसे मंच पर पहुंचे, जहां उन्हें न केवल पहचान मिली, बल्कि एक नए युग की नींव भी रखी गई। यही है विलेन केंद्रित अभिनय का नया युग। इस फिल्म में विलेन के किरदार को अक्षय खन्ना के पुनर्जन्म की तरह समझा जा सकता है। लेकिन, इसे समझने के लिए उनके लंबे लेकिन अदृश्य रहे करियर को समझना भी जरूरी है। फिल्म परिवार का सदस्य होते हुए भी उन्हें विनोद खन्ना के बेटे जैसा स्टारडम कभी नहीं मिला। 1997 में 'हिमालय पुत्र' से करियर की शुरुआत करने वाले अक्षय ने जेपी दत्ता की फिल्म 'बॉर्डर' में फौजी की भूमिका निभाई। फिल्म तो ब्लॉकबस्टर साबित हुई, पर बॉर्डर की सफलता उन्हें स्टारडम नहीं दे सकी। इसके बाद 40 से अधिक फिल्मों में काम करने के बाद भी वे हमेशा एक सलीकेदार, प्रतिभाशाली लेकिन अदृश्य अभिनेता बने रहे। सिनेमाघर से बाहर निकलने वाले दर्शकों को वे कभी याद नहीं रहे। हंगामा (2003) में उनका कॉमेडी रोल कालजयी माना जाता है, जहां उन्होंने 'जीतू वीडियोकॉन' की भूमिका में हास्य की ऐसी परिभाषा दी, जिसे दर्शक आज भी उन्हें इसी किरदार से पहचानते हैं। ताल, हलचल और 'दृश्यम-2' जैसी फिल्मों में भी उन्होंने शानदार अभिनय किया। लेकिन, कहीं न कहीं पॉजिटिव भूमिकाएं उन्हें स्थापित हीरो नहीं बना सकी। ढाई दशक से ज्यादा कड़ी मेहनत करने के बाद भी अक्षय खन्ना प्रतिभाशाली अभिनेता के रूप में जाने जाते रहे, सुपरस्टार कभी नहीं बने।

अक्षय खन्ना के अभिनय को समझना एक तरह से आधुनिक नाटकीय अभिनय के सूक्ष्मताओं को समझना है। वे ऐसे अभिनेता हैं, जो बहुत कम बोलते हैं, लेकिन जब बोलते हैं तो हर शब्द में वजन होता है। उनकी आंखों की भाषा, उनके चेहरे की सूक्ष्म अभिव्यक्ति और बॉडी लैंग्वेज ये सब मिलकर एक पूरा किरदार रचते हैं। 'धुरंधर' के रहमान डकैत के रोल में अक्षय इसे नई ऊंचाई पर ले गए। अक्षय का यह किरदार सिर्फ एक अभिनय नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक घटना बन गया। 'हंगामा' में उनका हल्का-फुल्का रूप और 'धुरंधर' में उनकी खतरनाक भूमिका अक्षय के अभिनय की विविधता को समझाती हैं। यह ऐसा बदलाव है, जो दर्शकों को विश्वास दिलाता है, कि सिनेमा केवल अभिनय नहीं, बल्कि परिवर्तन की अनोखी कला है। यह तथ्य सबसे अधिक दिलचस्प है, कि रणवीर सिंह जो फिल्म के हीरो हैं, अक्षय के किरदार से पूरी तरह ओवरशैडो हो गए। यह असामान्य घटना फिल्म इंडस्ट्री में कभी-कभार घटती है। लेकिन, 'धुरंधर' में यह स्पष्ट दिखाई दी। रणवीर एक प्रतिष्ठित अभिनेता हैं, लेकिन अक्षय की उपस्थिति इतनी प्रभावशाली है कि हर दृश्य में वे फिल्म को अपने नाम कर लेते हैं। यह एक अलग किस्म की ताकत है, न कि नायकत्व की, न हिंसा की, बल्कि अभिनय की शक्ति की। अक्षय खन्ना की यह वापसी एक नया मानदंड स्थापित करती है। अब यह साफ है कि यदि कोई निर्माता अपनी फिल्म के लिए खूबसूरत चेहरे वाला विलेन चाहता है, तो अक्षय खन्ना उसकी पहली पसंद होंगे।

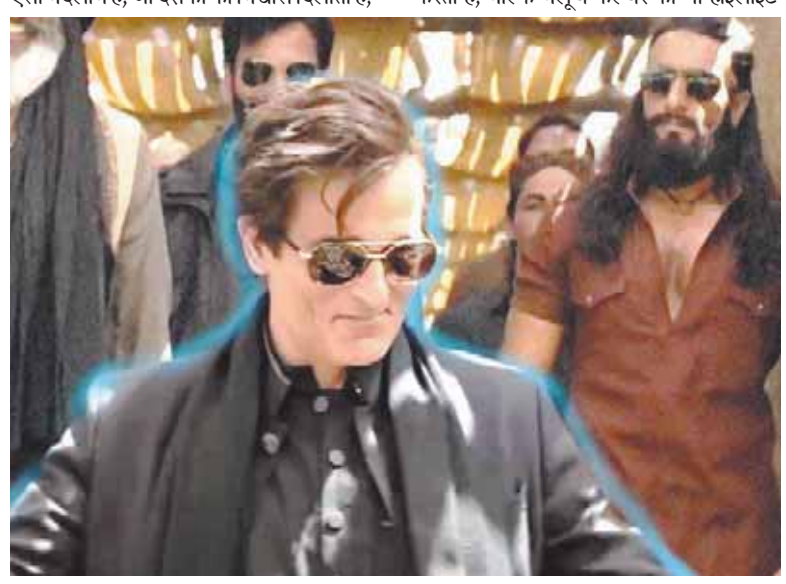

अक्षय खन्ना के लिए 2025 का साल अभिनय जीवन का बदलाव वाला दौर रहा। इस साल आई दो फिल्मों के नकारात्मक किरदार ने सब कुछ बदल दिया। पहले आई फिल्म 'छावा' में अक्षय ने औरंगजेब का जो किरदार निभाया, उसे जबरदस्त सराहा गया। लेकिन, 'धुरंधर' में अक्षय खन्ना के रहमान डकैत के किरदार ऐसा चमत्कार किया, जिसने विलेन के नए मानदंड स्थापित कर दिए। पाकिस्तानी अंडरवर्ल्ड के इस खतरनाक डकैत को अक्षय ने इस तरह जीवंत किया, मानो वह अभिनय नहीं, सच्चाई को परदे पर उतार रहे हों। उनके किरदार रहमान का सबसे खास पहचान है शांति और ठंडक। फिल्म में यह किरदार ऐसा विलेन नहीं है, जो चीखता-चिल्लाता है, बल्कि एक ऐसा पात्र है, जो खामोशी में मौत बिखेरता है। उसकी आंखों में जो खामोशी है, जो किसी भी संवाद को बेमानी कर देती है। अक्षय ने अपनी अदाकारी से दिखा दिया कि दमदार एक्टिंग के लिए चीखना-चिल्लाना जरूरी नहीं। उनकी खामोशी में भी इतना वजन था कि हर दृश्य खास हो गया।

'धुरंधर' की जिस बात ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया, वह है अक्षय का वह अनोखा सीन जिसमें वे 'फसला' नामक अरबी गाने पर डांस करते हैं। यह गाना बहरीनी डीजे सिंगर ईप फराजी ने 2022 में बनाया गया था। लेकिन, 'धुरंधर' में इसका उपयोग एक खास सीन में किया गया है। इसमें अक्षय की एंट्री इतनी शानदार है, कि वे दर्शकों के दिल पर छा गए। सोशल मीडिया पर इस सीन की तुलना 'एनिमल' के 'जमाल कुडू' गाने से की जाने लगी। क्योंकि, दोनों ही गानों में विलेन की एंट्री यादगार है। यह सीन सिर्फ एक डांस वाला दृश्य नहीं, इसमें अक्षय के किरदार की पूरी ऊर्जा है, जो उनको एक ही फ्रेम में सेलुलॉइड पर कैद कर देता है। फिल्म का यह गाना अक्षय खन्ना की एंट्री का हाइलाइट है, जो बलूच वॉर डांस से प्रेरित है। यह इम्प्रोवाइज्ड डांस एक टेक में शूट हुआ, जहां अक्षय खन्ना ने खुद ही नए स्टेप्स जोड़े। कोरियोग्राफर विजय गांगुली के मुताबिक, यह सीन लास्ट मिनट का था, लेकिन अक्षय खन्ना का जोश में आने से यह आइकॉनिक बन गया। सोशल मीडिया पर वायरल होने से गाना हिट हो गया, जिसने फिल्म की मार्केटिंग को भी आसमान पर पहुंचा दिया। यह डांस न सिर्फ दर्शकों को रोमांचित करता है, बल्कि बलूच कल्चर को भी हाईलाइट करता है।

फिल्म में अक्षय की विलेन की भूमिका प्रभावशाली और सफल प्रयोग कहा जा सकता है। लेकिन, करियर में विलेन भूमिकाओं का उनका पहला रोल नहीं है। अक्षय ने अभी तक 6 फिल्मों में ऐसी भूमिकाएं निभाई और हर बार उन्होंने दर्शकों को प्रभावित किया। 2002 में आई फिल्म 'हमराज' में भी उन्होंने विलेन की भूमिका निभाई। इसी साल आई 'दीवानगी' में भी उन्होंने नकारात्मक किरदार में अच्छा प्रदर्शन किया। 2008 की 'रेस' में अभय देओल के साथ रोमांचक दृश्य बनाने वाले अक्षय का विलेन रोल भी कमाल का था। 2016 में 'दिशूम' में भी उन्होंने इसी तरह का रोल किया। लेकिन, 2025 में 'छावा' और 'धुरंधर' ने एक नया दौर शुरू किया। 'छावा' में औरंगजेब की भूमिका करके पूरी इंडस्ट्री को दिखा दिया कि वे अपने अभिनय में पलट भी सकते हैं। लेकिन, 'धुरंधर' में अक्षय के रहमान डकैत ने तो इतिहास रच दिया। वो सिर्फ विलेन नहीं, ऐसा किरदार है, जो बॉबी देओल और संजय दत्त जैसे दिग्गज विलेन अभिनेताओं के लिए खतरा बन गया।

बॉक्स ऑफिस के नजरिए से भी 'धुरंधर' की सफलता की कहानी भी असाधारण है। फिल्म ने 5 दिसंबर को अपनी रिलीज के दिन ही 28 करोड़ की कमाई की, जो रणवीर सिंह के करियर की सबसे बड़ी ओपनिंग थी। पहले सोमवार को फिल्म ने 23.25 करोड़ की कमाई की, जो दर्शकों में फिल्म की मजबूत पकड़ दिखाता है। शुरू के पांच दिनों में इस फिल्म ने देशभर में 150 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन करके अपना बजट 280 करोड़ को पार करने की ओर तेजी से बढ़ गई। सातवें दिन तक यह आंकड़ा 200 करोड़ को पार कर चुका था और दसवें दिन फिल्म ने 351.75 करोड़ का घरेलू कलेक्शन हासिल कर लिया। जबकि दुनिया में इस फिल्म ने 530.75 करोड़ तक पहुंच बना ली। यह सफलता किसी बड़े सितारे की की नहीं, बल्कि दमदार कहानी, जांबाज अभिनय और दर्शकों की माउथ पब्लिसिटी पर आधारित है। लेकिन, फिल्म की सफलता की जो भी कहानी है, वो अक्षय खन्ना से शुरू होकर उन्हीं पर खत्म भी होती है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

पर्यटक ही नहीं फिल्मकार भी भागते हैं गोवा की तरफ

अशोक जोशी

क्रिसमस और नया साल आते ही देशभर के पर्यटक और शौकीन लोग अपना बोरिया बिस्तर बांधकर गोवा का रूख करने लगते हैं। वैसे तो पर्यटकों के बीच गोवा साल भर ही चर्चित रहता है। जहां तक गोवा की राजनीतिक

और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सवाल है पुर्तगालियों ने इसे अपना उपनिवेश बनाया और भारत की आजादी के बरसों बाद उन्होने यहां से अपना आधिपत्य छोड़ा। फिल्म कलाकारों ने भी गोवा की खूबसूरती को लोकप्रिय बनाने में अपना योगदान दिया जिसके परिणामस्वरूप 19 दिसम्बर 1961 को गोवा आजाद हुआ। तब से लेकर अब तक गोवा और उसके आसपास की दृश्यावली कई फिल्मों में दिखाई दी।

वैसे गोवा की आजादी को लेकर कोई खास फिल्में नहीं बनी। लेकिन, जितनी भी फिल्में बनी उन्होने दर्शकों पर प्रभाव जरूर छोडा है। गोवा की आजादी को लेकर सबसे पहले हंसोड अभिनेता निर्माता निर्देशक आईएस जौहर ने 1965 में 'जौहर महमूद इन गोवा' का निर्माण किया था। इस फिल्म के प्रति जौहर कितने गंभीर से इसका पता इसी तथ्य से चलता है कि उन्होने इसका प्रदर्शन 1 अप्रैल 1965 को किया। लेकिन इस फिल्म ने आईएस जौहर की लॉटरी लगा दी। जौहर, महमूद, सोनिया साहनी, सिमी ग्रेवाल और कमल कपूर अभिनीत यह फिल्म अपने गानां के कारण जमकर चली। कल्याणजी-आनंदजी ने इस फिल्म के लिए यह दो दीवाने दिल के, अंखियो का नूर है तू और धीरे रे चलो मोरी बांकी हिरनिया जैसे कर्णप्रिय गीतों की रचना की थी।

गोवा स्वतंत्रता संग्राम पर दूसरी फिल्म थी 1983 में प्रदर्शित पुकार। अमिताभ बच्चन, टीना मुनीम, जीनत अमान, रणधीर कपूर, प्रेम चौपडा, श्रीराम लागू अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन रमेश बहल ने किया था। इस फिल्म की कहानी के अनुसार आजादी से पहले गोवा में क्रांतिकारियों का एक समूह पुर्तगाल से आजादी के लिए लडता है। यह फिल्म अपने कथानक के बजाए समंदर में नहा कर और भी रंगीन हो गई हो जैसे गरमा-गरम फिल्म के कारण बॉक्स आफिस पर सफल हुई थी। इसके बाद गोवा के स्वतंत्रता संग्राम पर कोई उल्लेखनीय फिल्म तो नही बन पायी, लेकिन गोवा की लोकशन पर कई फिल्में बनने लगी। जिनमें गोवा के मंदिरां और चर्चों से लेकर समुद्री तट का भरपूर दोहन हुआ है।

कोंकण के होने के कारण गुरूदत्त को गोवा की लोकेशन्स खूब लुभाती थी। गोवा की पृष्ठभूमि पर

गुरूदत्त ने क्राइम फिल्म जाल का निर्माण किया था। देव आनंद और गीता बाली अभिनीत इस सफल फिल्म के गीत ये रात ये चांदनी फिर कहां और चोरी चोरी मेरी गली आना है बुरा आज भी सुने जाते हैं। गोवा में फिल्मायी गई फिल्मों में रति अग्निहोत्री और कमल हासन अभिनीत एक दुजे के लिए बेहद सफल हुई थी। ओल्ड पेट्रो ब्रिज ए डोना पाउला चेट्टी ए शांतादुर्गा मंदिर और हार्वालेम वाटर फाल्स की सुंदर लोकेशन पर फिल्माए दृश्यों को दर्शकों ने बेहद पसंद किया ।

संजय लीला भंसाली को गोवा की लोकेशन्स कुछ ज्यादा ही अच्छी लगती है। सलमान, मनीषा कोईराला और नाना पाटेकर जैसे कलाकारों को लेकर उन्होने 'खामोशी = द म्यूजिकल' का निर्माण किया। इस फिल्म में दर्शकों ने ओल्ड गोवा, अंजुना बीच, सालिगाव चर्च और रिवर क्रूज के दृश्यों का भरपूर आनंद लेते हुए मधुर संगीत का आनदं उठाया। इसके बाद संजय लीला भंसाली ने गोवा की पृष्ठभूमि लेकर खुबसूरत फिल्म 'गुजारिश' का निर्माण किया जिसमें ऋतिक रोशन और ऐर्श्वया राय की केमिस्ट्री को सराहा तो खूब गया लेकिन अपने विषय के कारण यह बॉक्स आफिस पर कोई खास कमाल नहीं कर पायी। यदि किसी फिल्म ने गोवा को सबसे ज्यादा लोकप्रिय बनाया तो वह थी अनिल कपूर, दीपिका और रणवीर सिंह की फिल्म 'दिल चाहता है' इसमें गोवा के चापोरा फोर्ट को बहुत सुंदरता के साथ सेल्यूलाइड पर उतारने का प्रयास किया गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि गोवा की सैर पर जाने वाले लोग गूगल पर 'दिल चाहता है' फोर्ट को सर्च करते दिखाई देते हैं।

हिन्दी फिल्मों में हास्य और स्टण्ट का घालमेल करने वाले रोहित शेट्टी ने अपनी गोलमाल श्रृंखला में गोवा का खास उपयोग किया है। रोहित ने अपनी इस श्रृंखला की अब तब बनी तमाम फिल्मों में दोना पाउला बीचए फोर्ट अगुआडा और पणजी स्थित जीएमसी काम्पलेक्स की लोकेषन्स को रोमांचक अंदाज में पेष करने में सफलता पायी । गोवा की पृष्ठभूमि का उपयोग कर सफलता का कीर्तिमान बनाने में अजय देवगन की फिल्म 'सिंघम' भी उल्लेखनीय है। इस फिल्म के एक्शन सिक्वेंस में दोना पाउल जेट्टी का इस तरह से उपयोग किया गया कि अब जो पर्यटक गोवा में इस स्थान पर जाते हैं तो गाइड यह बताना नही भूलते कि इस जगह पर जयकांत शिर्के के गुण्डों और बाजीराव के बीच धुंआधार मारपीट हुई थी। इस फिल्म का निर्देशन भी रोहित शेट्टी ने किया था।

रोहित शेट्टी की एक अन्य फिल्म दिलवाले में भी गोवा की लोकेशन्स का जमकर उपयोग किया गया। फिल्म में यह दिखाया गया था कि शाहरूख खान और वरूण धवन गोवा में रहकर कार रिपेयरिंग वर्कशाप चलाते हैं। इस फिल्म में यू तो पूरे गोवा के दर्शन होते है लेकिन इसकी ज्यादातर शूटिंग पंजिम चर्च पर हुई थी। शाहरूख खान की एक अन्य फिल्म जोश में भी गोवा की पृष्ठभूमि दिखाई गई है। रोहित शेट्टी और संजय भंसाली की तरह ही अजय देवगन के लिए भी गोवा की लोकेशन्स भाग्यशाली साबित हुई है। रोहित शेट्टी की फिल्मों के अलावा अजय देवगन की सफल सस्पेंस फिल्म दृश्यम को भी गोवा में ही फिल्माया गया है। फिल्म का नायक विजय सालगांवकर गोवा में केबल टीवी का व्यवसाय करता है। वह अपने परिवार के साथ सत्संग और खरीददारी के लिए पंजिम जाता है। उसका घर भी गोवा की सुंदर लोकेशन पर स्थित है।

इन फिल्मों के अलावा रोहन सिप्पी निर्देशित क्राइम थ्रिलर दम मारो दम भी उल्लेखनीय है जिसमें निर्देशक ने 2 से 3 हजार लोगों की भीड एकत्रित कर गोवा के अरपोरा मार्केट में शूटिंग की थी। गोवा की पृष्ठभूमि पर आधारित एक अन्य फिल्म है गो गोवा गोन ए फाइंडिग फेनीएडियर जिंदगी ए लेडिज वर्सेस रिकी बहल नाम शबाना और भूतनाथ शामिल है। महमूद निर्मित अमिताभ की फिल्म बाम्बे टू गोवा में केवल नाम ही नाम था बाकी पूरी फिल्म बस में ही फिल्मायी गई थी। हिन्दी फिल्मों के अलावा हालीवुड की कुछ फिल्मों में भी गोवा को शामिल किया गया है। इन फिल्मों दूसरे विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित जासूसी फिल्म द सी वोवेल्सएबोर्न सुपरमेसीए शेडो आफ द कोबरा और द लेटर्सए बेंकाक हिल्टन शामिल है।

फिल्मों की लोकेशन और पृष्ठभूमि के अलावा गोवा का लोकसंगीत भी फिल्मों में काफी पसंद किया गया है। संगीतकार प्यारेलाल के गुरू एंथोनी गोंसाल्विस भी गोवा के ही थे। उन्हें श्रृद्धांजलि देते हुए प्यारेलाल ने अमर अकबर एंथोनी का गीत माय नेम इज एंथोनी गोंसाल्विस रचा था। गोवा की पृष्ठभूमि पर आधारित गीत ना मांगू सोना चांदी मुंगडा ए को श्रोताओं ने खूब सराहा है।

भारत की पहली, पार्षद-पत्नी तैयार है...!

प्रकाश पुरोहित

'इस बार नगर निगम चुनाव में तुम खड़े हो रहे हो।' पत्नी ने यह आदेश यूं दिया, जैसे भाजपा ने नितिन नवीन को कार्यकारी अध्यक्ष बन जाने को कहा हो।

'क्यों, हम से का भूल हुई, जो ये सजा हमका मिली!' मजाक में बात को टालने का यही तरीका है।

'बस, मैंने तय कर लिया है कि अब मैं पार्षद-पत्नी बन कर रहूंगी।' वह अड़ गई थी।

'तो इससे बेहतर यह है कि तुम खुद हो पार्षद का चुनाव लड़ लो और बन जाओ पार्षद!' मैंने आसान रास्ता सुझाया।

'बहुत श्याणे हो, चुनाव लडूं मैं और तुम बगैर कुछ किए-धरे फौरन बन जाओ पार्षद-पति, ऐड़ा समझा है क्या! मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूंगी।' कोई फर्क नहीं हो रहा था मेरे समझाने का।

'अरे भाई, कसम लेता हूं, पार्षद बन गई तो तुम्हारे किसी काम में हाथ नहीं लगाऊंगा। वैसे भी मुझे पत्नी के लिए अधिकारियों से लड़ना-झगड़ना पसंद नहीं है। मैं तुम से ही आज तक झगड़ नहीं सका, तो फिर बाहर की तो बात ही जाने दो।' निहायत गंभीरता से समझाने और वचन देने की कोशिश की।

'सारे पति ये ही करते हैं, पहले तो खुद को नारीवादी बताते हैं और महिला के लिए रिजर्व-सीट से पत्नी को चुनाव लड़वा देते हैं और जीत के बाद यह भी भूल जाते हैं कि ये पार्षद ही नहीं, पत्नी भी है। चुनाव लड़ने तक ही पत्नी बाहर रहती है, वरना तो फिर वही चूल्हा और चौका। मीटिंग में भी पति ही पहुंचते हैं और ऊंची आवाज में बात करते हैं।' मुझे अचरज हो रहा था कि ये अखबार तो पढ़ती नहीं, फिर इतनी इंफरमेशन कहां से हासिल कर ली। टीवी पर भी 'सास भी कभी बहू...' से अलग नहीं गई और मोबाइल पर मायके से फुर्सत नहीं मिलती, तो फिर ज्ञान का यह बहाव कहां से और कैसे प्रवाहित हो रहा है।

'तुम्हें पता है, मेरा कोई दोस्त, नेता नहीं है।'

'वैसे भी नेता किसी के दोस्त नहीं होते हैं।' उसने मुझे करेक्ट किया।

'चलो, मान लेते हैं, लेकिन मैंने तो आज तक यह चुनाव भी नहीं किया कि शाम को लौकी बनेगी या गिलकी! फिर चुनाव लड़ने की तो मैं सोच भी नहीं सकता।' हाथ टेक दिए मैंने।

'वो सब मैं नहीं जानती, हमारा वार्ड अभी महिला का नहीं हुआ है, इसलिए तुम बनोगे पार्षद।' उसने खुश होते हुए मुझे यूं बताया, जैसे चुनाव जीत गई हो!

'लेकिन इससे मुझे तो कोई लाभ होगा नहीं, क्योंकि पॉलिटिक्स में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है और दुनिया भर के दंद-फंद मुझसे नहीं होने के कि सीएम आ रहे हैं तो पांच सौ की भीड़ लाओ, भंडारा हो रहा है तो राशन पहुंचाओ और पार्टी फंड में सहायता धनराशि भी जमा करो। मुझसे हजार रुपए तो गिनते बनते नहीं हैं, इतने हिसाब कैसे रखूंगा।' अपनी मजबूरी को इस कदर बयान किया कि लगा जिद छोड़ देगी।

'इसीलिए तो तुम्हें कह रही हूं पार्षद बनने के लिए। क्या महिला को पार्षद इसलिए बनाते हैं कि ये सारे काम उसे आते हैं या वह कर सकती है, नहीं ना! सभी जानते हैं कि नाम किसी और का और काम किसी और का। हम दोनों गाड़ी के दो पहिए हैं ना, तुम नहीं चल सके तो मैं चलती रहूंगी।' झटके से खड़ी हो कर चलने लगी। मुझे लगा अब बाहर निकल जाएगी, लेकिन चौखट से वापस आ गई, जैसे भाजपा से कांग्रेस में गया दीपक जोशी फौरन भाजपा में लौट आता है।

'तुम मुझे इस झंझट में आखिर फंसाना क्यों चाहती हो, शादी के समय भी मैंने कोई शिकायत नहीं की थी, तब भी हालत तो ऐसी ही थी ना!' उसने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसका मूल मुद्दा भटक रहा था।

'जब मैं कह रहा हूं कि तुम पार्षद बन जाओ तो फिर तुम्हें यह जिद क्यों है कि मैं ही चुनाव लडूं?'

'समझ नहीं रहे हो, महिला पार्षद बनती है तो बगैर कुछ किए-धरे उसका पति बन जाता है ना पार्षद-पति...! अफसर, सरकार, कानून सभी मान लेते हैं, जबकि यह गैर-कानूनी है। यदि कोई कमिश्नर किसी पार्षद पति को बैठक से बाहर कर दे तो कमिश्नर का बोरिया-बिस्तर गोल हो जाता है। कितने तो अधिकार होते हैं पार्षद पति के। खुद को पार्षद पति कहते कोई लजाता भी नहीं है, बल्कि यही पहचान शान से बताता है। यह सुख विधायक, सांसद या मंत्री होने में भी नहीं है।' उसकी तर्क ताकत से मैं बेहद प्रभावित हुआ और लगा ठीक ही है कि चुनाव नहीं लड़ा अब तक उसने।

'मान लो यदि मैं पार्षद बन गया तो तुम्हारा क्या भला होगा, कौन जानता है कि पार्षद की पत्नी कौन है, इतने पार्षद घूमते रहते हैं, किसी का जिक्र नहीं होता। पूछता भी कौन है!' आखिरी कोशिश कर रहा था हारी हुई लड़ाई जीतने की।

'इसीलिए, यही तोड़ना चाहती हूं, मैं भारत की पहली पार्षद-पत्नी होने का गौरव हासिल करना चाहती हूं। जब पड़ौसी गब्बर ने तुम पर बंदूक तान ली थी, तब मैं ही थी कि उसके हाथ से छीन ली थी, वरना उसी दिन कहानी खत्म हो जाती। जब पार्षद-पति हो सकता है तो मुझ में ऐसी क्या खामी है कि पार्षद-पत्नी नहीं हो सकती। जब महिलाएं चुनाव जीत कर भी घर में रहती हैं तो पुरुष भी बच्चे नहीं संभाल सकते क्या, जैसे कि तुम संभालते ही हो!' उसने पूछा या बताया या फैसला सुनाया।

सिवाय सुनने के मैं और क्या कर सकता था। महिला-पार्षद से भी गई गुजरी हालत है अपनी तो, इसलिए मैं अगला चुनाव लड़ रहा हूं, यह पक्का है, घर की हाइकमान का आदेश जो है।

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

पुराने के प्रति एक शुक्रिया तो बनता है

हर साल जाते-जाते कान में कुछ कहता है। हम अनसुनी कर देते हैं उसकी पुकार को। अरे! भई तुम तो अब बीत गये। अब तो हम नये साल से मुलाकात करेंगे। 1 तारीख की सुबह चाय पे बात करेंगे।

वाह अब तो नये साल से मुलाकात होगी

क्या तो वो हंसी रात होगी
बांहों में आसमाँ होगा तो
मुठ्ठी में तारे
यार मोबाइल पर होंगे
रिश्ते जगमगायेंगे सारे
पर ये तो बताओ नये साल
ये खुशहाली तुमने कहाँ से पाई
आख़िर गुज़रे साल ने ही तो
आगे की राह बनाई
तो सुनो नये साल
पुराने साल को एक सलाम
तो बनता है
इतने एहसान फरामोश मत हो
पुराने के जाने से ही तो नया संवरता है
नये के आने की खुशी में
पुराने के प्रति एक 'शुक्रिया' तो बनता है

क्या है गुज़रा साल और क्यों एक दिन में साल पुराना हो जाता है और एक दिन में अगला दिन नया साल के हिस्से आ जाता है। हम वैसे ही उठते, जागते, सोते है कोई फर्क़ नहीं पड़ता बस कुछ नये वायदे खुद से किये जाते है और डायरी में उतर जाते है।

वो कहते हैं
जो बीत गई, सो बात गई
बीती बात पर मिट्टी डाली क्या?
लगाया उस पर आज का नन्हा पौधा
बीते साल को जी भर कोसा
सोचा यही है सबसे अच्छा मौका
फिर आंख बंद कर शांति से सोचा
हम आने वाले कल का करते रहे इंतज़ार

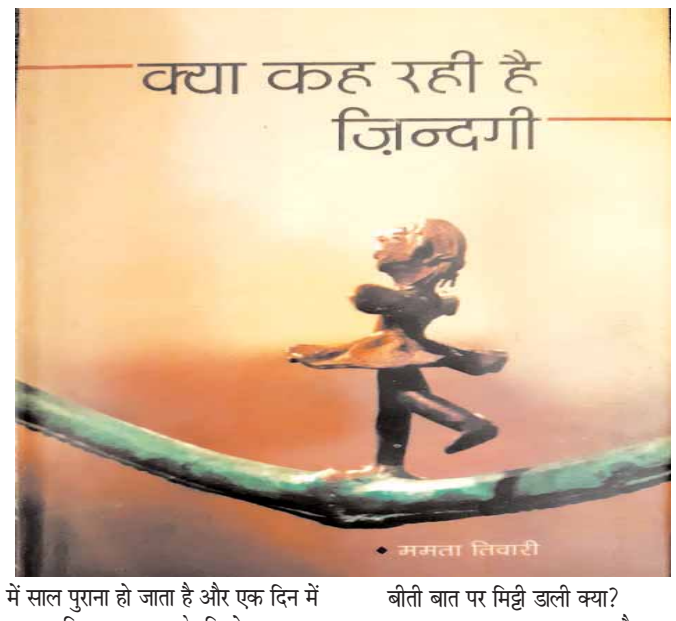

गुज़रे साल ने तुमको कब रोका
सब कुछ कितना सुखद तो था
वर्तमान को बात बात पे टोका
अब कर रहे है हिसाब
कितने अच्छे सिक्के खोये
नकली नोट ज़मा करते, डी मोनेटाइज़्ड हो गये
रिश्तों को पुराने नोट की
तरह बैंक से बदला
नये रिश्ते निभाने को तैयार हो गये
अकेले भी, बिना राही के रास्ता चलता
फेहरिस्त में नंबर बढ़ाने से कुछ नहीं होता
चले हो नये साल में दुनिया संभालने
एक रिश्ता, एक संबंध तुमसे नहीं संभालता
सीख देता है हमेशा गुज़रा साल
जितना है पहले उतना तो ले संभाल
सुन बंधु जितनी सामर्थ्य बस उतने ही,
रिश्ते, धनदौलत, यार दोस्त संभाल।
प्रार्थना, सेवा, आभार से बंदे,
खुद को कर ले मालामाल।

और दोस्तों बीते साल को बहुत अच्छे से याद करिये और अगले साल के लिये पूछते रहिये एक दूसरे से और क्या कह रही है ज़िंदगी?

संपूर्ण साहित्य के केन्द्र में मनुष्य और मनुष्यता का रक्षण

महेश कटारे 'सुगम'

डॉ.संध्या टिकेकर

प्राध्यापिका, शासकीय कन्या महाविद्यालय बीना सागर म. प्र.

बुंदेली भाषा के प्रथम गजलकार प्रख्यात जनकवि महेश कटारे 'सुगम' हिन्दी के 'आधुनिक' कवि हैं। 'आधुनिकता' बनी बनाई हदों को तोड़ने या लांघने का पर्याय है। सुगम भी इन्हीं अर्थों में आधुनिक हैं। वे बुंदेली कविताओं की परंपरागत सीमाओं को लांघते हैं। बुंदेली की छंदयुक्त और छंदमुक्त रचनाओं से अलग बुंदेली ग़ज़लों का एक नया संसार बुंदेली भाषियों के लिए खोलते हैं। बुंदेली कविता को नई विधा गजल का नया कलेवर देते हैं और अंग्रेजी भाषा के प्रभाव से कहीं दब सी रही बुंदेली की निरंतरता का ईमानदार उपकम करते हैं। प्रसिद्ध आलोचक उमाशंकर सिंह परमार के शब्दों में मैंने बहुत से समकालीन ग़ज़लकारों को पढ़ा। न तो जीवन की दुरभिसंधियों के दर्शन हुए, न लोक तत्व की अनुगूंज सुनाई दी लेकिन 'सुगम' अपनी संवेदना को लोकभाषा में कहने की कला जानते हैं। जुबान की सहजता जिन्दगी का रचाव बसाव चुस्ती कहन की लयपरकता के मामले में उनका कोई जवाब नहीं।

गांव के गेंवड़े ,अब जीवै को एकई चारौ, बात कैत दो टूक कका जू, सुन रये हौ 'सुगम' के इन बुंदेली गजल संग्रहों में बुंदेली की सहज रवानगी देखते ही बनती है। प्रसिद्ध कवि राजेश जोशी के अनुसार- वैसे गज़ल आम लोगों, ग्रामीणों के लिए न होकर समृद्ध एवं खास लोगों की नुमाईश में रहती थी लेकिन 'सुगम' ने ग़ज़ल को लोकभाषा बनाकर आम लोगों तक पहुंचाया। गज़ल को जनता की बोली बनाकर सटीक व्यंग्यात्मक लहजा इख्तियार किया।

सुगम बुंदेलखंड के ज़मीनी कवि हैं। बुंदेली का संस्कार उन्होंने जन्म ग्राम पिपरई से पाया है जो उनकी कर्मभूमि भिंड, 'कुरवाई' से रचनाकर्म के रूप में व्यक्त हो कर बुंदेलखंड से होते हुए पूरे देश में प्रवाहित होता है। किंतु उनकी भाषाई चेतना के स्त्रोत हमें बुंदेलखंड के इतिहास में मिलते हैं। बुंदेली से ममत्व रखने वाले 'सुगम' ने बुंदेली का खरा मोल जाना है उसकी असीम क्षमताओं को पहचाना है। उन्होंने बुंदेली के उस औदात्यसौंदर्य को देखा दिखाया है जो जन पाठकों में पुनर्पाठ की इच्छा जगाकर बुंदेली प्रयोग के लिए प्रेरित कर सके 7 बुंदेली गज़ल 'सुगम' की मौलिक उदभावना है। उनका यह प्रयोग जितना नया है उतना ही असरकारी भी है। अद्भुत कल्पना शक्ति और बुंदेली की उनकी ज़मीनी समझ इन दोनों की युति से उनकी ग़ज़लें संवरती रही हैं।

दे तौ रये हैं कुड़ा कुड़ा कें / बातें कर रये बड़ा चढ़ा कें / नई चेते तो एक दिना जे / मार डार हैं सड़ा सड़ा कें

'सुगम' बुंदेली का चलता फिरता शब्दकोश हैं । बुंदेली की कहावतें, बुझौअल उलटबांसियां आदि सभी कुछ उनके दोहों,

मुक्तकों और गजलों में उपस्थित है। 'सुगम'बुंदेली को अपनी सांसों की मानिंद जीते हैं उसी में व्यक्त होते हैं तथा औरों को भी ठेठ बुंदेली के ठाठ का स्पर्श करवाते हैं। बुंदेली को आम जन में प्रसारित करने के लिए उन्होंने इसे अभिव्यक्ति के आधुनिक माध्यम सोशल मीडिया से जोड़ने का बहु उपयोगी उपक्रम किया है।

झूटन की अब नानी मरवे बारी है /
बदमासी मौ के भर गिरवे बारी है /
खुल रई सबरी पोल उतर रई है मुईयां /
बदमाशन की साख बिगरबे वारी है।

सोशल मीडिया के 'फेसबुक' और व्हाट्सअप पर उनकी प्रतिदिन की पोस्ट की जाने वाली ऐसी गजलों से उनके देश-विदेश के पाठकों एवं प्रशंसकों की संख्या हजारों तक पहुंच गई है।

बुंदेली के प्रति अथाह समर्पण के चलते सुगम को राष्ट्रीय स्तर के अनेक सम्मान पुरस्कारों के अलावा हिन्दी अकादमी दिल्ली सहभाषा सम्मान से नवाजा गया है। इनके समग्र साहित्य पर कई शोधार्थियों द्वारा शोध कार्य जारी है। महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व विद्यालय छतरपुर में स्नातक के बुंदेली साहित्य के पाठ्यक्रम में उनकी रचनाओं को दुरुतपाठ में सम्मिलित किया गया है। उनकी ग़ज़लें मंचों से सस्वर प्रस्तुति का अवसर पाती रही हैं। सुगम के जन्म दिवस 24 जनवरी पर सन् 2019 इटावा उ.प्र में स्थापित चम्बल अर्काइव के विशाल

संग्रहालय भवन में एक कक्ष महेश कटारे सुगम कक्ष स्थापित किया गया है जिसमें कृष्ण पोरवाल जी के विशेष प्रयासों से 'सुगम' की बुंदेली ग़ज़लों को फ्रेम कर संरक्षित किया जा रहा है। स्पष्ट है कि ऐसे सभी प्रयास उन सभी संभावनाओं की खोज की परिणति है जिससे बुंदेली की शब्द संपदा को बोलने वालों की जुबां पर चढ़ने का अवसर मिल सके।

बुंदेली ग़ज़लें कहते हुए 'सुगम' ध्यान दिलाते हैं कि सतत प्रयोग से ही भाषा का अस्तित्व है। बुंदेली के बहुत सारे शब्द आज भुला दिए गए हैं। -

चून चना, मेथी, तिल, फूलन के लडुआ / संक्रात के घुल्ला गड़िया भूलई गये
हँडिया, चटुआ थपा बोंगना गंगाले /
थरा डेगची और बटुलिया भूलई गये
कुपरा, बेला, चमचा, फुंकनी और कल्ले /
गागर, घैला, दिया, चपुलिया भूलई गये।

वे उलटबासी और पहेली या बुझौअल से बुंदेली की ओर ध्यान खींचते हैं- उलटबासी देखत सुनत आत है हांसी /
पानी घरौ चिरैया प्यासी ।
पहेली-
तनक सौ मोड़ लयें गुटान,
धर मारै तौ हले जवान। (बिच्छु) ।

वे ध्यानाकर्षित करते हैं कि सशक्त भाषा बुंदेली सोशल मीडिया के पाठकों में निरंतर लोकप्रिय हो रही है। उनकी गजलें बताती हैं कि बुंदेली,बुंदेलखंड की संस्कृति को दिखलाने वाला एक स्वच्छ दर्पण है। वे प्रमाणित करते हैं कि बुंदेली ग़ज़ल विविध रसों से सहृदयों तक पहुंचने में समर्थ है।

पलकन में हम घुसा दुका लयें
बुरई नजर से तुमें बचा लयें
लरम लुचई कौ घाईं लगत हों
कट्टू तुमें बना के खा लयें
कैउ दिना के बाद मिली हों,
लग रऔ तुमें गरे चेंटा लयें ।

'सुगम' बागीपन के कवि हैं। इनका बागी रचनात्मक व्यक्तित्व अनेक सशक्त परंपराओं को अपने में समाहित किए हुए हैं। वे भाषा का खरापन और शैली का ठेठपन कबीर की परंपरा से उठाते हैं। गज़ल को वे दुष्यन्त कुमार की परंपरा से लेते हैं। चिंतन और संवेदनात्मक भाव-भूमि को वे प्रेमचंद की मार्क्स दृष्टि से ग्रहण करते हैं तथा इन सबसे ऊपर अपनी मौलिकता का उपयोग करते हुए वे एक आंदोलन की भांति बुंदेली का प्रसार करते हैं। आलोचक जीवन सिंह के शब्दों में ÷सुगम की गजलों में कहीं कबीर बोलते हैं तो कहीं निराला और कहीं नागार्जुन तो राजनीतिक नज़रिये की स्पष्टता के बतौर कहीं अदम ।

'सुगम' के संपूर्ण साहित्य के केन्द्र में मनुष्य और मनुष्यता का रक्षण है। सुगम के समय का मनुष्य समाज परस्पर से भयाक्रान्त है। साक्षर और तथाकथित जागा हुआ समाज है। यहां अपने स्वार्थों के प्रति बेहद चौकन्ना चालाक और धूर्त किस्म का बहुत बड़ा वर्ग है। छीनने खसोटने का घिनौना खेल यहां लंबे समय से पूरी करूरता से जारी है। यहां सच के लिए मुंह - खोलने वाले को हमेशा के लिए मौन करने वाले ताकतवर हाथ मौजूद हैं। पर 'सुगम' इससे भयहीन हैं। वे सच को परत दर परत खोलते हुए केवल और केवल मानवीयता के पक्ष में खड़े होते हैं। जो शासन अंधा बहरा हो चुका है जिसने अपने धन-बल से एक बड़े मानव समाज को शोषित समाज में बदल कर रख दिया है सुगम की ग़ज़लों के बाण वस्तुतः इसी शासन पर चले हैं।

वो अपनी अक्कल पै रीझौ बैठौ है /
हर कोऊ ऊके डर सें भींजौ बैठौ है /
की की हिम्मत करै बुराई मुखिया की /
वो बन के जमराज सरीखौ बैठौ है

'सुगम' स्वघोषित नास्तिक हैं। वे संसार के उसी अस्तित्व को स्वीकारते हैं जो आंखों से दिखाई दे कानों से सुनाई दे । अर्थात पंचेन्द्रियों से अनुभूत हो उसी जीवन पर वे विश्वास करते हैं। इससे इतर किसी अन्य शक्ति भगवान आदि की स्थिति को वे स्पष्ट नकारते हैं। हर क्षण को जीना सीखो लख चौरासी छोड़ो भी / इंसानों की कद्र करो चाल सियासी छोड़ो भी।

वस्तुतः महेश कटारे सुगम ने अपनी मौलिक उद्भावनाओं से बुंदेली को नवीनता से आलोकित किया है। बुंदेली को उन्होंने जनसंचार के अति आधुनिक संसाधनों पर सवार कर नगरों महानगरों के घरों गलियों तक पहुंचाया है। एक ग्रामीण बोली और हिन्दी की सहभाषा बुंदेली की उन्होंने राष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में एक नई पहचान स्थापित की है अपनी बोली- भाषा से असीम प्रेम करने वाले बुंदेली को सुगम बनाकर लोकप्रियता के शीर्ष तक ले जाने वाले 'सुगम' का यह सृजन अद्वितीय है और इसीसे 'सुगम' आधुनिकता के पर्याय हैं।

नया मेहमान

चंद्रशेखर दिघे

पारिवारिक तंग परिस्थिति के चलते पढ़ाई छोड़ नौकरी और जल्दी शादी इन सब बातों के चलते रमेश जल्द बुढ़ा गया था। पैसों की तंगी के चलते बीवी बच्चों से चख-चख डांट-डपट रोजमर्रा की बात हो गई थी। दिन-रात की मानसिक अशांति के कारण ऑफिस के कामों में गलतियां और फिर अफसर की फटकार उसपर सहकर्मियों की कुटिल मुस्कान यह सब उसकी आदत में शुमार हो चुके थे, जिंदगी जैसे नर्क बन चुकी थी। इसी बीच एक ऐसी सुबह का आगाज हुआ जब रमेश का जीवन-दर्शन ही बदल गया, ऑफिस जाने की तैयारी हो रही थी तभी बांसुरी के मधुर स्वरों ने उसका ध्यान खींच लिया मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई.. मधुर स्वर लहरियों से मन हिलोरें लेने लगा । मन ही मन बोला इसका मतलब खाली पड़े पड़ोस के मकान में नया किराएदार आ गया है बांसुरी के स्वरों से अंतरात्मा में बिजली सी दौड़ गई। ऑफिस में रमेश ने मन लगाकर काम

किया और लौटते में मिठाई का पैकेट और गुलदस्ता खरीदता सीधे पडौसी के यहां पहुंचा। दरवाज़ा खुला ही था, खनकती चूड़ियों और दमकती आभा लिए महिला ने उसका स्वागत किया। श्रीकृष्ण भगवान की रमणीय मूर्ति और पास में रखी बांसुरी ने मन मोह लिया परन्तु तत्क्षण उसकी नजर कोने में पलंग पर लेटे हुए अपाहिज़ व्यक्ति पर पड़ीं, जो रमेश को दोनों हाथ जोड़ अभिवादन का प्रयास कर रहा था। महिला ने जब पति के रूप में व्यक्ति का परिचय कराया तो रमेश का दिल बैठ सा गया और वह विचारों में खो गया तो बांसुरी के मनभावन स्वर इस महिला... सब समझ से परे था । आत्मग्लानि से भरा उसका मन तुलना करने पर मजबूर हो गया, इतनी विकट परिस्थितियों का सामना करनें के बावजूद शांतचित्त यह दैवी स्वरुप विदुषी महिला इसके विपरीत सामान्य परिस्थितियों को असामान्य बनाता एक मैं और अनायास ही उस स्त्री के आगे नतमस्तक होकर वह घर लौटा। गुनगुनाते हुए स्टूल पर चढ़कर वह रैक मे कुछ टटोलने लगा , पति के इस अंदाज से रेखा अचंभित थीं मानो सूरज पश्चिम में उग आया हो। उत्सुकतावश मुस्कुराते उसने रमेश से पूछा जनाब किस चीज़ की खोज में हैं?रमेश ने आत्मीय भाव से कहा पीएससी की तैयारी के लिए कुछ साल पहले किताबें खरीदी थी बस वहीं खोज रहा हूं।

जीवन चक्र

फोटो: गिरीश शर्मा